बदरीनारायण महात्म्य

श्रीबद्रीनाथका शृङ्गार

श्रीकेदारनाथ जी

विषय सूची ।

विषय सूची

श्रीबदरीनारायण स्तुति ।

——×*×——

पवन मन्द सुगन्ध शीतल,

हेम मन्दिर शोभितम् ॥

श्री निकट गङ्गा बहत निर्मल,

श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥

शेष सुमिरन करत निशिदिन,

धरत ध्यान महेश्वरम् ॥

श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति,

श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ।

इन्द्र, चन्द्र, कुबेर, दिनकर,

धूप दीप प्रकाशितम् ॥

सिद्ध मुनिजन करत जय जय,

श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥

शक्ति गौरि गणेश शारद,

नारद मुनि उच्चारणम् ।

योग ध्यान अपार लीला,

श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक,
ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मी कमला चंवर डोले,
श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
कैलाश में एक देव निरञ्जन,
शैल शिखर महेश्वरम् ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति,
श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
श्री बद्रीनाथ की पढ़त स्तुति,
होत पाप विनाशनम् ।
कोटि तीरथ भयो पुण्यं,
प्राप्त ये फलदायकम् ॥

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

भाषा

प्रथम अध्याय

अरुन्धतीजी ने कहा कि हे स्वामिन्! सर्व प्राणियों के हित की इच्छा के लिये और मेरी प्रीति के लिये श्री बदरीनारायण माहात्म्य को कृपा पूर्वक कहिये जिस माहात्म्य को शिवजी ने पार्वती से कहा था। हे तपोनिधे! वह बदरी क्षेत्र कितना बड़ा है और वहां जाने

से क्या २ फल प्राप्त होता है इन सबको विस्तारपूर्वक मेरे से कहिये।

सूतजी बोले कि हे शौनक! इस प्रकार अरुन्धती के प्रश्न को सुनकर क्षणमात्र भगवानका ध्यान कर बशिष्ठजी कहते भये कि हे प्रिये! जिस बद्री माहात्म्य को शिवजी ने पार्वतीजी से कहा है मैं उसी बदरीनारायण तीर्थ का अति पवित्र माहात्म्य तुमसे कहता हूं, सावधान होकर सुनो। बशिष्ठजी ने

कहा कि हे अरुन्धती! समस्त तीर्थों का सार बदरीनारायण क्षेत्र है यह तीर्थ, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थों का देनेवाला है। इस तीर्थके स्मरणमात्र से ही सब पापों का नाश हो जाता है। हे प्रिये! सर्व धर्म रहित व्यक्ति भी श्री बदरीनारा-यण के दर्शन करके अनायास मुक्ति पाता है। जिसने सैकड़ों जन्म भगवान की आराधना की हो, उसीको श्री बदरीनारायण भगवान

के दर्शन होते हैं और जो कोई शुद्ध चित्त से भक्ति पूर्वक किरीट से लेकर चरण पर्यन्त श्रीबदरीनारायण भगवान का दर्शन करता है वह एक ही जन्म में बिना जप तप किये ही मोक्ष पदको प्राप्त होता है और जो कोई प्रसङ्ग से ही बदरी बदरी कहता है उसके भी सब पाप नाश हो जाते हैं। जो मनुष्य महा-पातकी हो और उसका पाप कहीं न छूट सकता हो तो यहां आने से उस

पातकी के पाप क्षण भर में ही छूट जाते हैं और जो कोई श्रीबदरीनारायण भगवान को पंचगव्य से स्नान करा कर और इत्र कपूर केसर युक्त चंदन चढ़ाकर वस्त्राभूषण भेंट करता है वह सदा बैकुण्ठ में वास करता है। हे अरुन्धती ! जो कोई एक मुट्ठी मात्र भी भगवान को नैवेद्य अर्पण करता है वह भी एक राज्य का अधिकारी होता है और जो कोई अखण्ड दीपदान करता है वह बड़ा

भाग्यवान होता है। जिस प्रकार विष्णु भगवानके बराबर अन्य कोई देवता नहीं है उसी प्रकार दीपदान के बराबर दूसरा दान नहीं है। हे प्रिये ! जो कोई श्री बदरीनारायण की परिक्रमा करता है उसे पृथ्वी दान का फल मिलता है और जो कोई तप्तकुंड में स्नान कर भगवान का ध्यान करते हुए श्री बदरीनारा-यणके दर्शन को जाता है देवता भी नत मस्तक होकर उसकी स्तुति

करते हैं और कहते हैं कि हे पुण्यात्मा, तुम्हारे एक २ पग चलने से तुम्हें एक एक अश्वमेघ यज्ञका फल होता है और जो कोई श्री बदरीनारायण भगवान का चरणामृत प्रसाद ग्रहण करता है वह तीनों लोक में धन्य है, देवपूज्य है। हे अरुन्धती ! श्रीबदरीनारायण भगवान सब वेदों के ज्ञाता और अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करनेवाले निर्विकार,

नित्यानन्द, परम ज्ञानी विष्णु भी यही हैं इसीलिये मनुष्य भक्ति-पूर्वक इन्हींका ध्यान करे।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण माहात्म्ये प्रथमोऽध्यायः ॥

॥ श्री ॥

बदरीनारायण माहात्म्य

दूसरा अध्याय

श्री बदरी क्षेत्रका प्रमाण और बीचके तीर्थ

वशिष्ठ जी बोले कि हे अरुन्धती ! यह बदरी क्षेत्र चार प्रकार का है। प्रथम स्थूल बदरी क्षेत्र कण्वाश्रम अर्थात् नंदप्रयाग से लेकर गरुड़ गङ्गा पर्यन्त है। दूसरा सूक्ष्म गरुड़-गङ्गा से विष्णु प्रयाग तक है। तीसरा अतिसूक्ष्म विष्णुप्रयागसेकुबेरशिला तक है। चौथा शुद्ध बदरी क्षेत्र कुबेर

शिला से सरस्वती गङ्गा तक। कहते हैं यह बदरी क्षेत्र ४८ कोस लम्बा और १२ कोस चौड़ा है जो सारूप्य, सामीप्य, सायुज्य और सालोक्य मोक्ष को देने वाला है । हे अरुन्धती ! कण्वाश्रम जहांपर कण्व ऋषि नामक महा तेजस्वी महात्मा ने तप किया है यहांपर परम धार्मिक राजा नंद ने महायज्ञ किया था जिस यज्ञ में ब्रह्मादिक देवताओं ने प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष

रूप से आकर अपने अपने भाग को स्वयं ग्रहण किया था तभी से इस क्षेत्र का नाम राजा के नाम से नन्द प्रयाग रखा गया। यहां मन्दाकिनी और अलकनन्दा के संगम पर स्नान और तर्पण का बड़ा माहात्म्य कहा है। यहां से चार कोस की दूरी पर वशिष्ठाश्रम है। यहां पर वशिष्ठाश्रम से उत्तर की ओर विरही गङ्गा नामक एक नदी है जहांपर सती-विरह से

व्याकुल होकर शिवजी ने तप किया है। यहांपर विरहेश्वर देव के दर्शन करने से विरह दुःख नहीं होता है। इसके पूर्व मणिभद्र नामक एक सरोवर है जहां पर तीन रात्रि निवास करने से इष्ट वस्तु प्राप्त होती है। वहां से दक्षिण की ओर भद्रा नामक एक नदी है तहां पर सात सात पत्तों का एक विशालकाय बट बृक्ष है उसके पत्तों को देख कर दृष्टि स्तम्भित

हो जाती है। यहीं पर चारों पदार्थ का देने वाला एक सूर्य तीर्थ है। यहां से दो कोस पूर्व की ओर सम्पूर्ण पापों को नाश करने वाली गणेश जी की मूर्ति है। यहां पर दण्ड नामक राजा ने शिवजी का कठिन तप किया था तभी से इस स्थान का नाम दण्डकारण्य हुआ यहां पर स्नान दान जप करने से कोटि गुणा फल होता है। इसके उत्तर निष्कण्टक बिल्व वृक्ष के बन

में बिल्वेश्वर महादेवजी हैं। यहां पर अनुष्ठान की सिद्धि अति शीघ्र होती है। तदनन्तर अलकनन्दा नदी के दक्षिण भाग में गरुड़ गङ्गा नामक परम पवित्र तीर्थ है, वहां पर स्नान करके गरुड़ जी का पूजन करने से पांच हजार वर्ष तक विष्णु लोक में वास करता है और जहां पर गरुड़ गङ्गा का पत्थर है वहां सर्प भय नहीं होता। यदि सर्प विष ग्रस्त मनुष्य को गरुड़ गङ्गा

का पत्थर घिसकर पिला दे तो सर्प विष दूर हो जावे। तदनन्तर गरुड़ गङ्गा से चार मील की दूरी पर गणेश गङ्गा (पाताल गङ्गा) हैं, यहां पर स्नान करने से तथा इस नदी की सिन्दूरवर्ण मृत्तिका धारण करने से सब विघ्नबाधा दूर हो जाती हैं और गणेश जी प्रसन्न होकर सब मनोरथ पूर्ण करते हैं, और यहां दिव्य महर्षि सदा सामवेद का गान किया करते हैं, जिसे कोई पुण्यात्मा

ही सुनता है। यहां से उत्तर की ओर गङ्गा जी के किनारे चर्म-वती नामक एक नदी है, इसमें स्नान करने से मनुष्यगण पूजित हो जाता है। यहां से आगे अनङ्ग नामक राजा का आश्रम है, यहां पर अनङ्ग राजा ने कठिन तप करके वैकुण्ठ धाम प्राप्त किया था। इसके आगे मेष नामक पर्वत के ऊपर एक शिव लिङ्ग है। यहां एक बड़ा आश्चर्य है कि मध्यान्ह के समय

बड़ी बड़ी भुजाओं वाला एक युवा पुरुष स्त्रियों के साथ आकर शिव-जी व देवीजी का पूजन करके अदृश्य हो जाता है। यहां से पूर्वोत्तर कोण में पर्णखण्डाशिनी देवी का मनोहर स्थान है। यहां पर पर्वती जी ने पर्णखण्ड अर्थात् पत्तों के टुकड़े खाकर तपस्या की थी। यहां से आगे गङ्गाजी के तट पर शिवजी की स्वयं मूर्ति है तथा शिवलोक दायक शिवकुण्ड है। यहां

से आगे विष्णु कुण्ड है यहां स्नान करने से विष्णु में भक्ति उत्पन्न होती है, तदनन्तर दो कोस की दूरी पर ज्योतिर्मठ (जोशीमठ) है जहां भुक्ति मुक्ति देने वाले नृसिंह भगवान तथा वासुदेव भगवान स्वयं निवास करते हैं। यहां पर योगि-राज प्रहलाद जी सदा भजन करते हैं और यहीं पर दण्ड धारा का स्नान है। इस पाप नाशिनी दण्ड धारा में स्नान करके भक्तिपूर्वक जो

कोई नृसिंह भगवान तथा वासुदेव जी भगवान का पूजन करता है वह बैकुण्ठ में बास करता है। इस परम पवित्र तीर्थ के समान विष्णु-प्रिय अन्य तीर्थ नहीं है। यहां पर जो कुछ भी दान पुण्य किया जाता है उसका कोटि गुणा फल होता है। सर्वसिद्धि प्रदायक इस पीठ के समान अन्य पीठ नहीं है।

इस क्षेत्र में भूल कर भी चोरी परस्त्रीगमन आदि पापाचरण कदापि

न करें। यहां से ऊपर दक्षिण की ओर ज्योतीश्वर महादेव जी का मन्दिर है। तदनन्तर अलकनन्दा और धवला (विष्णु गङ्गा) के सङ्गम पर विष्णु प्रयाग महा पवित्र तीर्थ है। यहांपर ब्रह्मादिक देवता परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। हे अरुन्धती ! यहां सम्पूर्ण मनो-कामना के पूर्ण करने वाले अनेकों तीर्थ हैं उनमें से प्रधान तीर्थ दस कहे हैं।

जैसे शिवजी ने आदि में पार्वती से कहा है सो सुनो। पहिला ब्रह्म-कुण्ड, दूसरा विष्णुकुण्ड, तीसरा शिव कुण्ड, चौथा गणेश कुण्ड, पांचवां भृगुकुण्ड, छठा ऋषिकुण्ड, सातवां सूर्य कुण्ड, आठवां दुर्गा-कुण्ड, नवां धनदा कुण्ड, दसवां प्रहलाद कुण्ड है। इन दसों कुण्डोंमें स्नान करने से मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। हे अरुन्धती! वहां के स्मरण मात्र से ही सब पातकों का

नाश होता है। पहिले जहां विष्णु कुण्ड और प्रयाग में नारद्जी के आराधन करने पर सनातन विष्णु प्रत्यक्ष हुए थे और सन्तुष्ट हुए भगवान विष्णु ने उन नारद्जी के निमित्त सर्वाज्ञा दी हे महाभागे ! उसी दिन से यह तीर्थ विष्णु कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यहां पर स्नान करके अष्टाक्षर मन्त्र का जप करे। हे महाभागे ! तब बदरी मण्डलमें जाय वहां जय

विजय द्वारपालकों का पूजन करके यदि महापातकी मनुष्य भी गन्ध-मादन बदर्याश्रम की यात्रा करे तो उसके सम्पूर्ण पातक नाश हो जाते हैं। हे प्रिये ! बदरी क्षेत्र के समान अन्य तीर्थ कोई भी नहीं है। इसलिये जैसे भी बन सके बद-रिकाश्रम की यात्रा अवश्य करें क्योंकि इस कलिकाल में और किसी तरह से मुक्ति नहीं है।

इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण माहात्म्ये द्वितीयोऽध्यायः

———*———

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

तीसरा अध्याय

(श्री बदरी क्षेत्रका प्रमाण और बीचके तीर्थ)

वशिष्ठजी बोले कि हे अरुन्धती ! यहां से आगे देवदुर्लभ परम स्थान है इसे सूक्ष्म बदरी क्षेत्र कहते हैं । यह निश्चय जानो अब धवला (विष्णु गङ्गा) जो श्री गङ्गाजी की नवमी धारा है इसके मध्य में जो जो तीर्थ हैं उनको भली भांति

सुनो। हे प्रिये! सङ्गम के उत्तर किनारे की ओर एक बाण की दूरी पर ब्रह्मलोकको देनेवाला ब्रह्मकुण्ड है। इसके चौदह दण्ड की दूरी पर शिवकुण्ड विख्यात है इसमें स्नान करने से सब यज्ञोंका फल मिलता है इसके अर्धबाणकी दूरी पर गणेश-कुण्ड है यहां स्नान करनेसे सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं। हे प्रिये! अब अलकनन्दा गङ्गाजी के मध्य में जो तीर्थ हैं उन्हें भी सुनो। फिर

अलकनन्दा के संगम से उत्तर एक बाण की दूरी पर भृगुकुण्ड है, यहां स्नान करने से सब पातक छूट जाते हैं। इससे चार दण्ड दूर सूर्यलोक का देनेवाला सूर्य-कुण्ड है, यहां से चार दण्ड की दूरी पर दुर्गाकुण्ड है, इससे आगे धनदाकुण्ड है, फिर प्रहलाद कुण्ड है यहां पर मध्याह्न के समय एक मछली उछला करती है जिसे कोई पुण्यात्मा ही देखते हैं। ऐसे विष्णु

प्रयाग को विष्णुद्वार करके कहते हैं। प्रायः घोर कलिकाल में जब बदरी अगम्य हो जायगी तब धवला नदी के तटपर जो भविष्य बदरी है वहां बदरी क्षेत्र होगा। वहां पर अग्निदेव ने कठिन तप किया है, अतः दो उष्णधारा भी हैं जिनमें स्नान करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। तदनन्तर विष्णु प्रयाग से ६ मील की दूरी पर पण्डुकेश्वर नामक स्थान है, यहां पर योगबदरी

के दर्शन हैं। योगबद्री भगवान का दर्शन करने से मनुष्य मन-वांछित फल को प्राप्त करता है। यहां पर पाण्डु राजा ने तप किया है तभी से इस स्थान का नाम पण्डुकेश्वर हुआ। यहां से आधा मील आगे शेषधारा नामक एक तीर्थ है, वहां पर मेष संक्रान्ति को गंगा स्नान का बड़ा माहात्म्य है। यहां से ६ मील की दूरी पर वैखा-नस तीर्थ नामक स्थान है, यहां पर

मरुत राजा ने स्वर्णमय यज्ञ किया था। यह मुनियों की यज्ञभूमि है। यहां से आगे स्वर्णधारा अर्थात् कञ्चन गंगा तीर्थ है, यहां तीन दिन स्नान, दान, जप करने वाले को कुबेरजी प्रसन्न होकर मिट्टी या पत्थर दे देवें तो वह सोना हो जाता है। यहां से आगे कुबेर शिला है अतः नर नारायण पर्वत को नमस्कार कर शुद्ध बदरी क्षेत्र में प्रवेश करे तदनन्तर ऋषि गंगा में

स्नान करे और पुराने वस्त्र ग्राम निवासियों को देकर नवीन वस्त्र धारण करे फिर पञ्चतीर्थ में आच-मन स्नान कर श्री बदरी नारायण भगवान के दर्शन को जावे। ऋषि-गंगा, कूर्मधारा, प्रहलादधारा, तप्त-कुण्ड और नारदकुण्ड यह पञ्च-तीर्थ कहे हैं।

हे अरुन्धती! ऋषिगंगा में स्नान करने वाला मनुष्य ऋषि तुल्य हो जाता है और कूर्मधारा-

का जल यदि पाखण्डी भी पिये तो वह भगवान का अनन्य भक्त होता है और प्रहलाद धारा के स्नान करने से विष्णुप्रिय होता है और तप्तकुण्ड में स्नान करने से मनुष्य दरिद्री नहीं होता तथा नारद कुण्ड में स्नान करने वाला विष्णु लोक को प्राप्त करता है। हे अरुन्धती ! इस बदरी क्षेत्रमें मुक्ति के देनेवाले अनेकों तीर्थ हैं जिनमें तप्तकुण्ड, ब्रह्मकपाल, वसुधारा का विशेष माहात्म्य कहा है।

इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण माहात्म्ये तृतीयोऽध्यायः

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

चौथा अध्याय

तप्त कुण्ड तीर्थ

वशिष्ठजी ने कहा कि हे अरुन्धती ! एक समय प्रयागराज में ऊर्ध्वरेता ऋषियों की सभा में अग्नि ने हाथ जोड़ कर पूछा कि हे ब्रह्मज्ञानियो ! कृपा करके बतलाइये कि मेरा तेज सब कुछ भक्षण करने से पातकों से लिप्त रहा है सो यह पातक किस प्रकार से छूटेगा, तब

सब मुनियों की आज्ञा से व्यासजी ने कहा कि सर्व भक्षी प्राणी की रक्षा करने वाला एक यही उपाय है कि तुम श्रीबद्रीनारायण की यात्रा करो और वहां भगवान श्री बद्री-नाथजी के दर्शन करने से सब पातकों से छूट जाओगे। ऐसे व्यास जी के वचन सुन कर अग्नि देव श्री बद्रिकाश्रम में आये और भगवानके दर्शन कर सब पापों से छूट गये। तब से अग्नि देवता यहां

पर सदैव उष्ण जल रूप से स्थित रहते हैं तभी से इस अग्नितीर्थ का नाम तप्त कुण्ड हुआ। इस कुण्ड में स्नान करने से महा पातकी के पाप भी जल कर भस्म हो जाते हैं और यहां पर दान करने से कोटि गुणा फल होता है और जो कोई नारियल के गोला मे छेद करके सुवर्णका गुप्त दान करता है उसके कुल में दरिद्रता नहीं आती है।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्री बदरीक्षेत्रे तप्तकुण्ड-माहात्म्ये चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

पांचवां अध्याय

(ब्रह्मकपाल तीर्थ)

वशिष्ठजी बोले कि हे अरुन्धती! अब ब्रह्मकपाल माहात्म्य को साव-धान होकर सुनो। स्वामी कार्ति-केय ने कहा कि हे पिता जी! जिस स्थान पर आपके हाथ से ब्रह्माजी का कपाल गिरा था उस जगह का माहात्म्य कहिये। तब शिवजी ने कहा कि एक समय ब्रह्मा जी

अपनी निज पुत्री सरस्वती पर आसक्त हो गये। यह अनिष्ट मुझसे नहीं देखा गया और मैंने तत्काल ही ब्रह्माका सिर काट डाला। अकस्मात वह ब्रह्मा का सिर मेरे हाथ में चिपट गया। तब मैं भगवान विष्णुजी की शरण में गया, तब विष्णु भगवान ने कहा कि आप श्री बदरी क्षेत्र में जाइये। तब मैं बदरी क्षेत्र में गया। वहां जाते ही मेरे हाथ से चिपटा हुआ ब्रह्मा का सिर गिर पड़ा इसलिये उस स्थान

का नाम ब्रह्मकपाल तीर्थ हुआ। यहांपर जो कोई विधिपूर्वक पिण्ड-दान करता है उसके पितरों को उत्तम गति प्राप्त होती है। इस स्थान पर पितर अपने वंश वालों की राह देखते रहते हैं कि यहां हमारे वंश वाला कोई आवे और पिण्डदान करे तो हम उत्तम स्वर्ग को प्राप्त हों, इसलिये यहां आकर जो कोई विधिपूर्वक पिण्डदान करके ब्राह्मण भोजन कराता है उसके पितर बैकुण्ठ में वास करते हैं।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्री बदरीक्षेत्रे ब्रह्मकपाल माहात्म्ये पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

छठवां अध्याय

(वसुन्धारादि अन्य तीर्थ माहात्म्य)

वशिष्ठजी बोले कि हे अरु-न्धती ! पुरी से उत्तर की ओर चारों वेदकी चार धारा हैं जिनमें स्नान करने से मनुष्य सर्व वेद-पाठी पण्डित होता है। यहां से आगे इन्द्रधारा नामक तीर्थ है। यहां तीन वर्ष तक स्नान करके चार हजार इंद्रजीत मंत्रका जप करने से

इन्द्र तुल्य हो जाता है। यहां से आगे माता मूर्ती का दर्शन है। जो कोई परम भक्ति से माता मूर्ती का दर्शन करता है उसके ब्रह्महत्या के समान पाप भी नाश हो जाते हैं। यहां से आगे गणेश गुफा मुचकुन्दगुफा व्यास पुस्तक आदि तीर्थ हैं जिनके दर्शन मात्र से ही सैकड़ों जन्म के पाप नाश हो जाते हैं। यहां से आगे सरस्वती गंगा और अलकनन्दा के संगम

पर केशव प्रयाग तीर्थ है। यहां पर तीस हजार वर्ष आयु भक्षण करके तप करने से जो फल मिलता है वही यहां स्नान मात्र से प्राप्त होता है। यहां से आगे वसुधारा नामक परम पवित्र तीर्थ है। यहां पर अष्टवसु ने तप किया था तभी से इस तीर्थ का नाम वसुधारा विख्यात हुआ। यहां धारा में स्नान करने से उत्तम गति प्राप्त होती है यहां पुण्यात्माओं को जलकी धारा

में भगवान के दर्शन होते हैं, जिन के दर्शन से फिर मातृगर्भवास नहीं होता। जिनके माता पिता में अन्तर होता है उनके शिर पर जलधारा नहीं पड़ती है। वसुधारा के नीचे धर्मशिला है, जिस पर जलधारा पड़ती है, तहां स्नान प्रदक्षिणा कर धर्मशिला पर जो कोई अष्टाक्षर का मन्त्र जपता है वह सायुज्य मोक्ष को पाता है। यहां से आगे प्रभास, पुष्कर, गया,

नैमिष, कुरुक्षेत्र यह पांच धारायें पड़ती हैं, इनमें स्नान करने से उत्तम गति प्राप्त होती है। तद-न्तर सर्वसिद्धिप्रदायक चक्रतीर्थ है, यहां सुदर्शन मन्त्र का जप करने से तत्काल सिद्धि प्राप्त होती है। यहां से आगे सोमकुण्ड तीर्थ है जो दृष्टिगोचर होते ही सर्व मनोरथ को पूर्ण करने वाला है। यहां पर चन्द्रमा ने कठिन तप किया था, तभी से यह कुण्ड चन्द्रमा की

कलाओं की तरह प्रति दिन घटता बढ़ता है। यहां पर स्नानादि कर्म करने से मनवांछित फल प्राप्त होता है। यहां से आगे सत्यपद तीर्थ है, इस सत्यपद तीर्थ के समान तीनों लोक में अन्य तीर्थ नहीं है। यहां अधम पुरुष भी
नहीं है। यहां अधम पुरुष भी
स्नान मात्र से ही विष्णु का प्यारा होता है। यहां पर स्नान कर भक्ति पूर्वक भगवान बदरीनारायण

का स्मरण करता हुआ महापन्थ को जावे।

हे अरुन्धती! यहां पर से जो लोग आलोप होना चाहते हैं वह यहां से अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है। हे प्रिये! जब सत्यपद से महापन्थ जाने में छ कोस तक मृत्यु न हो तो सदेह स्वर्ग जाने के लिये दिव्य विमान को पावे और जो रास्ते में मर जावे

तो दिव्य देह धारण कर बैकुण्ठ को जाय। हे अरुन्धती, यहां पर अनेकों तीर्थ ऐसे हैं जिनके माहात्म्य और नियम कहने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। इन तीर्थोंके दर्शन करने से ही मनुष्य को निःसन्देह भगवान में भक्ति उत्पन्न होती है।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण-माहात्म्ये षष्ठोऽध्यायः ॥

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

सातवां अध्याय

——×*×——

(अलकनन्दा तीर्थ)

वशिष्ठजी ने कहा कि हे अरुन्धती ! राजा भगीरथ के रथ का जो मार्ग है तिस पर तो श्री गङ्गा जी एक ही कला से गईं; परन्तु श्री बदरीनारायण भगवान के चरण कमलोंको मस्तक पर धारण करने के हेतु पन्द्रह कला से श्री बदरी

क्षेत्र आई। हे प्रिये! जैसा फल बदरीनाथ कीर्तन से होता है वैसा ही श्री अलकनन्दा स्नान करने से होता है। हे अरुन्धती! जो श्री अलकनन्दा गङ्गाजी के किनारे पर नारद कुण्ड है उसमें श्री बदरीनारायण भगवान की पचास मूर्तियां नित्य प्रति निवास करती हैं। यह नारदजी का हृदय रूपी कुण्ड है। इस कुण्ड में स्नान करने से मनुष्यको विष्णुलोक प्राप्त होता है।

हे प्रिये ! इस नारद् कुण्ड के समान तीर्थ तीन लोक में नहीं है इस-लिये श्री बद्रीपुरी के अन्तर्गत जो तीर्थ है वहां जाने का सामर्थ्य न होय तो नारद् कुण्ड का ही आश्रय ले। श्री अलकनंदा गङ्गाजी के मध्य और किनारे पर जो नारद् शिला, गरुड़ शिला, वाराह शिला, नृसिंह शिला, मार्कण्डेय शिला, पञ्च शिला के नाम से विख्यात हैं इनके दर्शन मात्र से ही विष्णु

भगवान में निश्चल भक्ति उत्पन्न होती है। श्री बदरीपुरी में जो केदारेश्वर महादेवजी हैं वह भी श्री बदरी नारायण का ही रूप है और जो यहां पर घंटाकर्ण नामक देव हैं वह शिव अंशसे पुरी की रक्षा करते हैं। हे अरुन्धती! पुरी के पश्चिम उर्वशी कुण्ड नामक जो तीर्थ है वहां स्नान करने से सब पातक नाश हो जाते हैं। हे अरुन्धती! बदरी

क्षेत्रके माहात्म्यको तो मैंने विस्तार से कह दिया, अब क्या सुनने की इच्छा है सो कहो।

इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण माहात्म्ये सप्तमोऽध्यायः।

* श्री *

॥ बद्रीनारायण माहात्म्य ॥

आठवां अध्याय

(यात्रा के फल)

अरुन्धती जी ने कहा कि हे तपोनिधे ! अब कृपा करके कहिये कि श्री बद्रीनारायण यात्रा करने से क्या क्या फल होता है। तब वशिष्ठजी ने कहा कि हे प्रिये, तुम धन्य हो जो बदरीनारायण ऐसे परम पवित्र माहात्म्य को सुनने की तुम्हारी ऐसी बुद्धि है। हे अरु-

न्धती ! अब मैं बद्री नारायण यात्रा का आश्चर्यजनक फल कहता हूं ध्यान देकर सुनो। हे प्रिये ! प्रतिष्ठानपुर नामक नगर में परम धार्मिक शङ्कर गुप्त नाम करके एक बड़ा धनवान वैश्य रहता था। एक दिन वह हरिभक्ति में तत्पर हो ब्राह्मणों से विनय पूर्वक पूछने लगा कि हे विप्रवर ! कृपा पूर्वक कहिये कि मेरे पुत्र कब उत्पन्न होगा। मैं बिना पुत्र के

बड़ा दुखी हूं । इस प्रकार वैश्य की विनीत प्रार्थना को सुनकर द्विजवर बोले कि हे वैश्य ! तेरे पुत्र तो होगा, किन्तु पापी उत्पन्न होगा। यदि वह बदरीनारायण की यात्रा करेगा तो समस्त पातकों से छूट जायगा । हे प्रिये ! इस प्रकार ब्राह्मणों के आशीर्वाद से उस वैश्य की पत्नी गर्भवती होती भई और यथा समय पुत्ररत्न प्रसव किया । फिर वह वैश्यपुत्र चन्द्रमा की कला

के समान बढ़ते-बढ़ते यौवनावस्था को प्राप्त होता भया। एक समय वह वैश्यपुत्र बहुत से धन माल को लेकर बेचने जा रहा था कि मार्ग में उसे एक परम सुन्दरी यौवन-शालिनी म्लेच्छ की स्त्री देख पड़ी। तब वह वैश्य पुत्र उस सुन्दर नेत्र-वाली म्लेच्छ स्त्री पर मोहित हो गया, और अपना सारा धन उस स्त्री को देकर उसके साथ विहार करने लगा। इस प्रकार दोनों

परस्पर प्रेम में मग्न हो बहुत दिनों तक संसार सुख भोग करते रहे। हे प्रिये ! फिर जब उसका सब धन खर्च हो गया तब वह वैश्यपुत्र उस स्त्री को लेकर एक निर्जन बन में जाकर रहने लगा और चोरी करने लगा। एक दिन वह वैश्य-पुत्र जब चोरी करने गया तो उसी समय सोने के गहने पहिने एक ब्राह्मण आता दिखाई पड़ा, तब उस वैश्यपुत्र ने धनुष पर बाण

चढ़ाकर उस ब्राह्मण को मार डाला और सब धन ले लिया। फिर वह वैश्यपुत्र यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण को मरा देखकर अत्यन्त दुखी हुआ और अपने मन में विचार करने लगा कि मैंने धनके लोभ में पड़कर बड़ा दुष्कर्म किया है। अब मैं कहां जाऊं, अब मेरा उद्धार कैसे होगा? इस भांति सोचता विचारता हुआ वह वैश्यपुत्र अपने पिता शङ्करगुप्त के चरणों पर आकर

गिर पड़ा, और बोला कि हे पिता ! मैं ब्रह्महत्यारा चाण्डाली के साथ सम्भोग करने वाला महा पतित हूं। मेरी क्या गति होगी, मेरी रक्षा करो। इस प्रकार शङ्करगुप्त ने अपने पुत्र का विलाप सुना तो करुणा से हृदय भर आया। फिर शङ्करगुप्त ने कहा कि हे पुत्र ! तुम बदरीनारायण यात्रा करो तभी इस ब्रह्महत्या से छूटोगे। इस तरह जब उस वैश्यपुत्र ने अपने पिता के

वचन सुने तो तत्काल ही गणपति का पूजन कर और ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर बदरिकाश्रम को चला गया। वहां भगवान श्री बदरीनारायण जी का दर्शन कर सब पातकों से छूट गया। हे अरुन्धती ! इस प्रकार श्री बदरीनारायण भगवान के दर्शन का वैभव तुमसे कहा, अब क्या सुनने की इच्छा है।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्रीबदरीनारायण-माहात्म्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

---

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

नवम अध्याय

——::——

(शरीर त्यागकी गति)

अरुन्धती ने कहा कि हे भगवन् ! अब दया करके बदरी क्षेत्र में शरीर त्यागने से कैसी गति होती है सो कहिये । बशिष्ठ जी बोले कि तुम धन्य हो जो ऐसे परम पवित्र बदरी क्षेत्र के विषय में शरीर त्याग का माहात्म्य पूछा । हे प्रिये ! अवन्ति नगर में बड़ा

धार्मिक धन धान्य से पूर्ण चन्द्र-गुप्त नामक एक वैश्य रहता था और वह हाथी और उनके दांतों को बेचा करता था। एक समय वह अपने पुत्र, बन्धु तथा स्त्री सहित श्री बदरीनारायण यात्रा को गया। जब वह बदरी क्षेत्र में पहुंचा तो वह स्नान दान करने लगा और उस वैश्य की स्त्री हाथी दांत के आभूषण पहिने स्नान कर रही थी कि एकाएक उसके अङ्ग से एक

हाथीदांत का गहना निकल कर उस स्थान पर गिर पड़ा। हे देवि! जब वह वैश्यपत्नी स्नान कर अपने पति चन्द्रगुप्त के पास आई ही थी कि इतने में चन्द्रगुप्तादिकों ने देखा कि शंख, चक्र, गदा, पद्म से शोभायमान विष्णु स्वरूप गज-राज (हाथी) को विष्णुदूत विमान पर बिठाये बैकुण्ठ में लिये जा रहे हैं। ऐसा आश्चर्यजनक दृश्य देख कर वह वैश्य किं कर्त्तव्य विमूढ़

की भांति अवाक् रह गया। इतने में विमान पर से गजेन्द्र हाथी ने मधुर वाणी से कहा कि हे वैश्य! मैं गुरुदन्त नाम का हाथी हूं और तुम्हारे ही प्रसाद से मैं बैकुण्ठ जा रहा हूं। इस प्रकार उस हाथी का वचन सुनकर चन्द्रगुप्त अत्यन्त विस्मित हुआ और बोला कि हे गजराज! तुम किस पुण्य के प्रताप से परम गतिको प्राप्त हुए हो। तब गजराज ने कहा कि हे वैश्य!

तुम्हारी स्त्री मेरे दांतके गहने पहन कर बदरी नारायण में आई तहां स्नान करती समय कोई भूषण उसके अङ्ग से निकल कर गिर गया, उसी पुण्य के प्रभाव से मैं पाप रहित हो गया हूं वरना तिर्यक योनि ज्ञान हीन पशुको बैकुण्ठ कहां मिल सकता था। यह तुम्हारे ही प्रसाद से मुझे बैकुण्ठ धाम मिला है। हे अरुन्धती! ऐसे गजराज के बचन सुन वह वैश्य

बदरिकाश्रम में वास कर अपने प्यारे प्राणों को त्यागता हुआ जीवन मरण से रहित होकर परम मुक्ति को प्राप्त करता भया और उसके स्त्रीपुत्रादिक भी यहां अच्छे भोगों को भोग कर अन्त में बैकुण्ठ धामको चले गये। हे प्रिये! यह बद्री नारायण का अति पवित्र माहात्म्य यश, आयु, पुत्र तथा धन धान्यको देनेवाला है। इसको सुनकर मनुष्य के सकल मनोरथ

पूर्ण होते हैं और अन्त में विष्णु की सायुज्यता प्राप्त होती है। हे प्रिये! जिसके घर में बदरी माहात्म्य हो उसे आधिव्याधि चोर अग्नि तथा राजा का भय नहीं होता है और जो कोई नियमपूर्वक इस महापवित्र माहात्म्यको सुनता है उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और अन्त में बैकुण्ठ धामको जाता है।

॥ इति श्री स्कन्दपुराणान्तर्गते श्री बदरीनारायण माहात्म्ये नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

* श्री *

॥ बदरीनारायण माहात्म्य ॥

दसवां अध्याय

(बदरी वास और यात्रा के नियम)

अरुन्धती जी ने कहा कि हे स्वामिन् ! अब दया करके बदरी वास और यात्रा के नियम कहिये। इस चारों पदार्थ के देने वाले परम पवित्र श्री बदरी माहात्म्य को सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती है। तब वशिष्ठजी बोले कि हे अरु-न्धती ! पहिले बदरी नारायण

यात्रा के नियम सावधान होकर सुनो। हे देवि! प्रथम शुभ मुहूर्त में गणपति का पूजन करे। गुरु ब्राह्मणों को नमस्कार करे। फिर पितृ तर्पण के लिये सङ्कल्प करे। फिर अपने इस लोक के हेतु जाने अथवा बिना जाने जो पाप किये हों, उनकी शान्ति रक्षा के लिये मैं श्री बदरी नारायण यात्रा को जाऊंगा। ऐसी मन में इच्छा करके श्री बदरी नारायण भगवान

को स्मरण करता हुआ घर से प्रस्थान करे, फिर कण्वाश्रम अर्थात् नन्द प्रयाग से जितने तीर्थ मिलें सब जगह स्नान दर्शन करता हुआ देव दखनी पर आवे। वहां भक्ति पूर्वक पुरी को नमस्कार कर बदरी नारायण भगवान की जय बोलता ऋषि गङ्गा पर आवे। वहां स्नान कर पुराने वस्त्र याचकों को देकर नवीन वस्त्र धारण करे। फिर कूर्म-धारा, प्रहलाद धारा में आचमन

कर तप्तकुण्ड में स्नान करके यथा-
शक्ति ब्राह्मणों को दान देवे। फिर
नारदकुण्ड में आचमन करके श्री
बदरी नारायण को स्मरण करता
हुआ, केदारेश्वर के दर्शन कर भग-
वान के मन्दिर में प्रवेश करे। वहां
जाकर जय विजय को नमस्कार
कर मन्दिर के अन्दर जावे। वहां
जगत्पति श्री बदरीनारायण भगवान
को भक्ति पूर्वक प्रणाम कर, एकाग्र-
चित्त होकर किरीट से लेकर चरण

पर्यन्त दर्शन करे, और सविनय प्रार्थना करे कि हे दीनबन्धु ! मुझ पर प्रसन्न होइये । फिर अन्य देवताओं के दर्शन करे, यथाशक्ति कुछ भेंट करे, फिर मन्दिर के बाहर आकर लक्ष्मी जी के दर्शन करे, और भगवान के मन्दिर की परिक्रमा करे, फिर घण्टाकर्ण का दर्शन करे, फिर भगवान का भोग लगा हुआ प्रसाद ग्रहण करे, फिर ब्रह्म कपाल कर पिण्डदान कर, तद-

नन्तर सुफल ग्रहण कर अपने घर को जावे। यदि मार्ग व्यय से अधिक द्रव्य पास में होवे तो वह भी भगवान के अर्पण कर दे। हे अरुन्धती! इस प्रकार निमय पूर्वक यात्रा करने से सर्व श्रेष्ठ और कल्याणदायक होता है। हे प्रिये! बद्रीनारायण यात्रा के तो नियम कहे। अब बद्रीवास के नियमों को ध्यान देकर सुनो। हे देवि! जो कोई बद्रीवास करने की इच्छा

करे, वह प्रति दिन ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान कर श्री बदरीनारायण भगवान का दर्शन किया करे, और एक समय भोजन करे और मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों से हिंसा न करे, प्रति दिन भगवान की कथा भक्ति पूर्वक सुना करे और चोरी, परस्त्रीगमन तो भूल कर भी कदापि न करे, क्योंकि यहां का किया हुआ पातक कोटि गुणा होकर वज्रलेप हो जाता है। हे अरुन्धती!

ऐसे नियम पूर्वक बद्रीवास करने वाले को भगवान विष्णु में उत्तम प्रीति प्राप्त होती है यह निश्चय जानो। हे प्रिये! नाना प्रकार के धर्म, कर्म, ज्ञान को छोड़ कर बद्रीवास अवश्य करे, क्योंकि इस कालिकाल में और किसी तरह से मुक्ति नहीं है। हे देवि! जो कोई श्री बद्रीनारायण माहात्म्य को भक्ति से एकाग्र चित्त होकर पढ़ता या सुनता है उसके समस्त पातक नाश हो जाते हैं।

इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गते श्री बद्रीनारायण माहात्म्ये दसमोऽध्यायः।

ॐ शान्तिः ! ॐ शान्तिः !! ॐ शान्तिः !!!

* श्री *

॥ केदारनाथ माहात्म्य ॥

शिव जी ने कहा कि हे प्रिये शैलकुमारी ! जिस केदार क्षेत्र का माहात्म्य मैंने आज तक किसी से नहीं कहा, वह तुमसे कहता हूं ध्यान देकर सुनो। यह हमारा परम प्रिय केदार क्षेत्र है। इसे मैं कभी

नहीं छोड़ता हूं । यहां पर आकर जो कोई निवास करता है वह मरणोपरान्त कैलाश वास करता है, और जो कोई भक्ति पूर्वक गङ्गोत्तरी का जल मेरे ऊपर चढ़ाते हैं, वह शिवलोक में वास करते हैं । हे देवि ! जो कोई श्री केदारनाथ जी पर प्रेम से घृत मलकर गङ्गाजल से स्नान करा कर और चन्दन पुष्प चढ़ाते हैं, वह सदा कैलाश वास करते हैं, और जो कोई यहां आकर

शुद्ध चित्त से श्री केदारनाथ जी के दर्शन करते हैं वह सब पापों से छूट जाते हैं और जो कोई मन्दाकिनी गङ्गा का स्नान कर पिंडदान करता है उसके पितर परम गति को प्राप्त होते हैं और यहां पर जो कोई रेतःकुण्ड में जलपान करता है वह फिर संसार में दुबारा जन्म नहीं लेता और जो कोई यहां के हंस कुण्ड में श्राद्ध तर्पण करता है उसके पितर नरक से मुक्ति पाकर

परमपद को प्राप्त होते हैं और जो कोई यहांके उदर कुण्ड का जल अपनी माता को पिलाता है वह अपनी माता के ऋण से उद्धार हो जाता है। इसके आगे भृगुतुङ्ग है यहां से गिर कर जो कोई पातकी प्राण त्याग करे तो वह परम गति को प्राप्त होता है। इसके आगे महापथ है यहां से पाण्डवोंने स्वर्ग यात्रा की थी।

हे प्रिये! एक समय किसी

ग्राम सीमा के बाहर एक व्याध रहता था जो सदा मृगों को मार कर खाता था। एक दिन वह व्याध मृग मारते मारते केदार क्षेत्र में जा पहुंचा। वहां देखता क्या है कि एक दिव्य रूपधारी स्वर्ण मृग निर्भय चला जाता है (यह स्वर्ण मृग रूपधारी नारद मुनि थे) यह देख उस व्याध ने उस मुनि मृग को मारने के लिये धनुष पर बाण चढ़ाया कि वह स्वर्णमृग अदृश्य

हो गया, यह देख वह व्याध अति विस्मित हुआ और आगे चला तो वह क्या देखता है कि एक बिल में एक मेढकको काले सर्पने पकड़ रखा है और खाये है कि इतने ही में वह मेढक अर्ध चन्द्रधारी साक्षात् शिवरूप हो गया। यह देख वह व्याध विस्मित होकर इधर उधर देखने लगा और डर गया कि यहांपर भूत तो नहीं रहते हैं या मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा

हूं, नहीं नहीं मैं तो जाग्रत और सावधान हूं तब मामला क्या है मैंने तो ऐसी घटना कभी कानों तक नहीं सुनी फिर आज यह क्या देख रहा हूं। हे देवि ! ऐसी चिन्ता में पड़ कर वह व्याध अत्यन्त भयभीत हो भागने लगा तो फिर क्या देखता है कि एक सुन्दर मृग को एक व्याघ्र मारे डालता है। इतने में फिर वहीं देखता है कि वह मरा हुआ मृग

साक्षात् त्रिलोचन शिवरूप हो गया, इतने में किसी व्याध ने उस व्याघ्र को भी मार डाला और वह व्याघ्र भी बैल हो गया। फिर वह शिवरूपी मृग उस बैलरूपी व्याघ्र पर चढ़कर कैलाश की ओर चला गया। ऐसा अद्भुत कौतुक देखकर उस व्याधका सर्वाङ्ग रोमाञ्चित हो गया और वह व्याध विस्मय विस्फारित नेत्रों से इधर उधर ताकने लगा। इतने में देखता क्या

है कि एक मनुष्य तनुधारी देवर्षि नारदजी आ रहे हैं तब व्याध ने नारदजी से पूछा कि महाराज मैंने आज इस बनमें कई विचित्र घटनाएं देखी हैं कृपा कर इनका हाल कहिये। यह सुन नारदजी ने कहा कि तू धन्य है और मूर्ख भी है और यह बन अति पवित्र है। तब व्याध ने नारद से पूछा कि मैं धन्य का पात्र किस लिये हूं मैं तो महापातकी हूं। यह सुन नारद

जी ने कहा कि धन्य तू इससे है कि तूने इस बन में आकर शिव स्वरूप का दर्शन पाया, और मूर्ख इस कारण से है कि तेरे देखते देखते मण्डूक और मृग भी इस तीर्थ की महिमा से शिवरूप हो गये और तूने तीर्थ को नहीं पहिचाना और तीर्थ का प्रमाण तो तुझे जब ही मालूम हो चुका है। ऐसे यथार्थ वचन नारदजी के सुन व्याध ने भक्ति पूर्वक प्रणाम करके

कहा कि हे प्रभो ! कहिये कि मुझ पातकी का उद्धार कैसे होगा। तब नारदजी ने प्रसन्न होकर कहा कि तू इसी केदार क्षेत्र में रह तभी तेरा निस्तार होगा। ऐसा उपदेश देकर नारद जी तो अन्तर्ध्यान हो गये और वह व्याध वहीं निवास करके पश्चात् परम गति को प्राप्त करता भया।

हे देवि ! जो कोई शुद्ध चित्त से भक्तिपूर्वक इस श्री केदार माहा-

त्म्य को पढ़ता या सुनता है वह सदा शिवलोक में वास करता है। बोलो श्री केदारनाथ की जय।

॥ इति श्री स्कन्द पुराणान्तर्गते श्री केदारनाथ माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

* श्री *

गंगोत्तरी यमुनोत्तरी माहात्म्य

कपिल क्रोध दग्ध अपने पितरों के उद्धार के लिये जब राजा भगीरथजी ने श्री गङ्गाजी की कठिन तपस्या की तब श्री गङ्गा जी ने प्रसन्न होकर राजा भगीरथ जी को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और बोलीं कि वत्स ! मैं तुझ पर प्रसन्न हुई तू वर

मांग। तब राजा ने श्री गङ्गाजी की स्तुति की और विनीत भाव से बोले कि हे जननी! हमारे पितरों का उद्धार बिना आपकी कृपा से नहीं होगा। तब गङ्गाजी ने कहा कि मैं तुम्हारे पितरों का उद्धार अवश्य करूंगी, और फिर कलियुग के द्वितीय चरण में मैं स्वर्ग को चली जाऊंगी। इतना कह गङ्गाजी अन्तर्ध्यान हो गईं। इधर राजा चञ्चल चित्त से इधर उधर

देखने लगे। कुछ देर बाद राजा भगीरथजी ने देखा कि दो कन्याएं एक गौर वर्ण और एक कृष्ण वर्ण एक पर्वत के शिखर पर खड़ी हैं। तब राजा उन कन्याओं के पास गये और नम्र होकर पूछा कि आप इस निर्जन स्थान में क्योंकर आईं तब गौर वर्ण कन्या ने कहा कि मैं गङ्गाजी हूं और यह श्याम वर्ण की कन्या सूर्यपुत्री यमुना है, मैंने तुम्हें वरदान दिया था अतः अब

मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। इतना कह कर श्री गङ्गाजी चञ्चल प्रवाह से बहने लगीं। इसी जगह परम पवित्र तीर्थ गङ्गोत्तर हुआ और वाम भाग में यमुनोत्तर नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध हुए। इस गङ्गोत्तरी यमुनोत्तरी माहात्म्य को शुद्ध चित्त होकर जो कोई पढ़ता है या सुनता है वह मोक्ष पद को प्राप्त होता है। यहां पर गङ्गाजी के किनारे श्री गङ्गाजी का मन्दिर है

इसी मन्दिर में गङ्गाजी, यमुनाजी, सरस्वतीजी के दर्शन होते हैं। जो कोई श्रीगङ्गाजी के दर्शन भक्ति-पूर्वक करता है वह निःसन्देह बैकुण्ठ प्राप्त करता है।

॥ श्री गंगोत्तरी यमुनोत्तरी माहात्म्य समाप्तम् ॥

* श्री *

॥ त्रियुगीनारायण माहात्म्य ॥

यह स्थान यज्ञ नामक पर्वत पर नारायण तीर्थ नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर श्री लक्ष्मी नारायण भगवान के दर्शन होते हैं। इसी जगह महादेव पार्वती के विवाह का सुन्दर स्थान है। यह मन्दिर

बहुत पुराना और प्रसिद्ध है। यहां पर एक हवन कुण्ड है जिसकी अग्नि सदा प्रज्वलित रहती है बुझती कभी नहीं है। इसी हवन कुण्ड में नारायण मन्त्रसे जो कोई हवन करता है वह जन्म मरण से रहित हो जाता है और स्वर्ग में बास करता है और यहां पर एक ब्रह्मकुण्ड है जिसका जल पीले रंग का है उसी में छोटे छोटे सांप रहते हैं केवल उनके देखने से डर

होता है परन्तु वे काटते नहीं हैं। इसके दक्षिण भाग में विष्णुतीर्थ है इन दोनों कुण्डों में स्नान व परिक्रमा करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है।

।। इति श्री त्रियुगी नारायण माहात्म्यं सम्पूर्णम् ।।

॥ तुंगनाथ माहात्म्य ॥

शिवजी ने कहा कि हे पार्वती ! मान्धाता महाराज के क्षेत्र से दक्षिण की ओर सम्पूर्ण मनोरथ का पूर्ण करने वाला तुङ्गनाथ क्षेत्र है जो दर्शन मात्र से ही शिव-लोक देने वाला है। हे देवि ! जो कोई प्रथम भैरव को नमस्कार कर

श्री बद्रीनारायण पुरी

गङ्गोत्तरी यमुनोत्तरी

तुङ्गेश्वर महादेव की पूजा करता है, उसे तीनों लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। जहां ब्रह्मादिक देवता सदा महेश्वर की स्तुति करते हैं वहां जो कोई जल, बिल्वपत्र, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणादिक चढ़ाते हैं वे असंख्य वर्ष पर्यन्त कैलाशवास करते हैं, और जो कोई तुङ्गनाथ में शरीर छोड़ता है वह हजारों युग शिवलोक में पूजित रहता है। हे प्रिये! एक नगर में धर्मदत्त

नामक एक बड़ा विद्वान पण्डित रहता था उसके एक पुत्र और एक कन्या थी। पुत्र का नाम कर्म शर्मा था। कर्म शर्मा बाल्यावस्था में पिता के पढ़ाने से भी नहीं पढ़ा और कुसङ्ग में पड़कर चोर, जुआरी, शराबी और व्यभिचारी हो गया। पिता के मरने पर कर्म शर्मा ने अपना सारा धन कुव्यसनों में नष्ट कर दिया। कर्म शर्मा की एक स्वरूपवती बहन थी, दुर्भाग्य वश

वह भी महाव्यभिचारिणी निकली। इसलिये उसके बान्धवादिकों ने दोनों को त्याग दिया। तब कर्म शर्मा तो देश देशान्तर में घूमने लगा और उसकी बहन वेश्या बन कर अपने प्रेमी के साथ घूमने निकली। घूमते घूमते वह भी उसी स्थान पर जा पहुंची जहां कर्म शर्मा रहता था। अकस्मात् उन दोनों में आसक्ति हो गई। कर्म शर्मा अपनी बहन को वेश्या

जानकर ही भोग विलास करने लगा और चोरी आदि से अपनी जीविका का निर्वाह करने लगा। हे देवि ! एक दिन एक बन में कर्म शर्मा को सिंह ने मार डाला। तब उसे लेने को भयङ्कर यमदूत आये। इतने में एक भूखा काग आया और उसकी हड्डी चोंच में पकड़ कर उठा ले गया। दैवयोग से उस कौवे ने तुङ्गनाथ में लाकर हड्डी पर का मांस खाया और हड्डी

वहीं डाल दी। हे देवि ! जब उस पापी कर्म शर्मा की हड्डी मेरे क्षेत्र में पड़ी तो वह निष्पाप हो गया। तब नन्दीगणादि मेरे दूतों ने यम-दूतों की फांसी छुड़ा कर कर्म शर्मा को कैलाश में ले आये। वहां बहुत काल पर्यन्त रहकर कर्म शर्मा एक धर्मात्मा राजा हुआ ऐसा तुङ्गनाथ माहात्म्य है। हे प्रिये ! जो कोई एक बार भी तुङ्गनाथ के दर्शन करता है वह परमपद को प्राप्त

होता है और जो कोई इस तुङ्ग-नाथजी के माहात्म्यको शुद्ध चित्त होकर भक्ति पूर्वक पढ़ता या सुनता है उसके सम्पूर्ण पाप नाश हो जाते हैं !

॥ इति श्री तुङ्गनाथ माहात्म्यं समाप्तम् ॥

* श्री *

॥ जगन्नाथजी माहात्म्य ॥
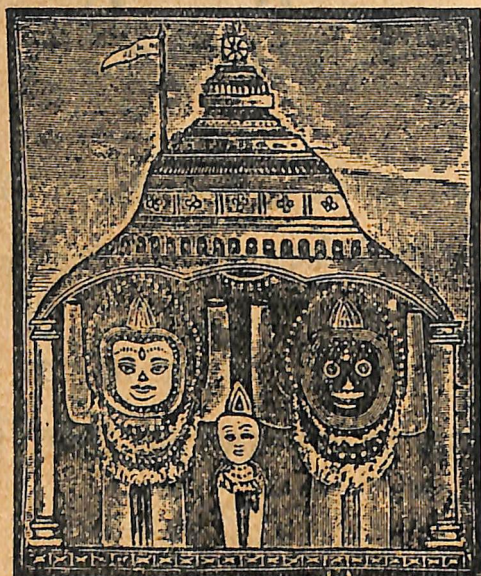
एक समय परम पुनीत नैमि-षारण्य क्षेत्र में अट्ठासी हजार ऋषियों ने श्री सूतजी से पूछा कि

हे सूतजी ! पृथ्वी मण्डल में ऐसा कौनसा तीर्थ उत्तम है जहां के दर्शन, स्नान से ही मनुष्य भव-सागर के पार हो जावे। ऐसे ऋषियों के वचन सुन श्री सूतजी कहते भये कि हे शौनकगण ! भव-सागर से पार करने वाला और संसार में अनेक सुख देने वाला श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र है। मैं उसी के माहात्म्य को कहता हूं। ध्यान देकर सुनो। उड़ीसा देशमें नीला-

चल पर्वत पर परम पवित्र श्री पुरु-
षोत्तम क्षेत्र है। यहां पर श्री जग-
न्नाथ जी नाम से भगवान वास-
करते हैं, वहां जाकर जो कोई बल-
भद्र, सुभद्रायुक्त श्री जगन्नाथजी के
दर्शन करता है वह सब पापों से
छूट जाता है, और वहां के जो कोई
रोहिणीकुण्ड में स्नान करता है वह
उत्तम गति को प्राप्त होता है। एक
समय वहां पर एक काग रोहिणी-
कुण्ड का जल पीकर शरीर को

त्यागने पर चतुर्भुजी होकर दिव्य रूप धारण कर स्वर्ग को चला गया था, और यहां के चन्दन तालाव में जो कोई स्नान करके तर्पण करता है उसके पितरों को उत्तम गति प्राप्त होती है। पहिले यहां पर नीलमाधव भगवान विराजमान थे। एक समय मालवाधिपाति राजा इन्द्रद्युम्न भगवान के दर्शनार्थ यहां आया। उसी समय नील-माधव भगवान अन्तर्ध्यान हो गये

और जब राजा को भगवान के दर्शन न मिले तो राजा ने भगवान के दर्शनार्थ अति कठिन तप किया। तब भगवान ने स्वप्न में दर्शन देकर आज्ञा की कि मैं स्वयं काष्ठमूर्ति होकर प्रगट हूंगा। तब राजा ने अति प्रसन्न हो एक बड़ा भारी मन्दिर बनवाकर भगवान की स्थापना कर पूजा की। तभी से इस क्षेत्र का नाम पुरुषोत्तम क्षेत्र हुआ और भगवान श्री जगन्नाथ जी नाम से

विख्यात हुए। यहां पर इन्द्रद्युम्न सरोवर में जो कोई स्नान करके भगवान का प्रसाद पाता है उसे कोटि गौ दान का फल मिलता है। आगे फिर जिस समय में भगवान के दर्शन को जावे तो इस प्रकार दर्शन करे। पहिले सिंह दरवाजे से होकर मन्दिर में प्रवेश करे, परिक्रमा में भोगमण्डल, गणेशजी, वटबृक्ष, नृसिंहजी, रोहिणीकुण्ड, लक्ष्मी जी का दर्शन कर

मन्दिर के भीतर जावे। वहां जगन्नाथ जी, सुभद्रा जी, बलभद्र जी, सुदर्शनजी, के दर्शन कर और यथाशक्ति भेंट चढावे, फिर लोकनाथ जी के दर्शन करे। इस रीति से परिक्रमा करके जो जगन्नाथ जी का ध्यान करते हैं उनको साक्षात् दर्शन का फल प्राप्त होता है। पुरी से ९ मील पर साक्षी गोपालजी हैं यहां श्रीकृष्ण राधाजी के दर्शन होते हैं। यह भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन पानेवाले की साक्षी देते हैं।

यहां से आगे भुवनेश्वर महादेव जी हैं, वहां पर भुवनेश्वर जी के दर्शन और बिन्दुह्रद नाम सरोवर है जिसमें स्नान करने से सब तीर्थों के स्नान का फल मिलता है।

* श्री *

॥ रामेश्वर माहात्म्य ॥

एक समय ऋषियों के पूछने पर श्री सूतजी कहते भये कि सब क्षेत्र और तीर्थों में एक सेतुबन्ध रामेश्वर भी परम पवित्र तीर्थ है।

श्री रामचन्द्र जी द्वारा निर्मित सेतु के समीप समस्त तीर्थों से

युक्त श्री रामेश्वर तीर्थ है जिसमें स्नान, दान तथा रामेश्वर जी का दर्शन करने से मनुष्य शिवलोक में निवास करता है।

शौनकादिक ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी ! श्री रामचन्द्र जी ने किस लिये अगाध समुद्र में सेतु बांधा और रामेश्वर जी की स्थापना की ? तब सूत जी ने कहा कि हे शौनक ! अयोध्यापुरी के राजा दशरथ जी के पुत्र मर्यादा पुरुष

श्री रामचन्द्र जी जब चौदह वर्ष के लिये बन में आये और जब पञ्च-वटी से सीताजी को रावण हर ले गया, उन्हीं सीता जी की खोज हनुमान जी द्वारा कराई और जब मालूम हुआ कि मेरी प्रिया को रावण लङ्का में हर ले गया है तब नल, नील द्वारा समुद्र में सेतु बंधाय सेना सहित लङ्का को गये। वहां रावण को मार विभीषण को राज्यतिलक देकर जब लक्ष्मण,

सीता सहित फिर उसी स्थान पर आये तब वहां पर समस्त ऋषियों ने आकर श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की। उस स्तुति को सुनकर श्री रामचन्द्र जी ने सबको अभिवादन किया और पूछा कि हे ऋषि, मुनिगणो ! हमने युद्ध करके अनेक जीवों को मारकर ब्रह्मवंश का नाश किया है। उसके शान्त्यर्थ कोई उपाय बतलाइये। यह सुन मुनि-यों ने कहा कि आप यहां पर एक

शिवलिंग स्थापित करें जिससे आपका क्षोभ दूर हो जायगा और संसार का भी बड़ा उपकार होगा। तब श्री रामचन्द्र जी ने सीता जी के बनाये हुए लिंग को स्थापित कर पूजा की। तब शिवजी अति प्रसन्न हो साक्षात् वहां पर आये और कहने लगे कि हे श्री रामचन्द्र जी आपके स्थापन किये हुए इस शिवलिंग का जो कोई दर्शन करेगा वह सब पापोंसे छूट जायगा और

यहां के चौबीस तीर्थों में जो कोई स्नान करेगा वह सब पापों से छूट कर कैलास वास करेगा। यहां पर धनुषकोटि तीर्थ, चक्रतीर्थ, शिव-तीर्थ, अगस्ततीर्थ, गङ्गातीर्थ, यमु-नातीर्थ, गयातीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, सूर्यतीर्थ, चन्द्रतीर्थ, अग्नितीर्थ, लक्ष्मीतीर्थ, अमृततीर्थ, सीतासर-तीर्थ, रामतीर्थ, लक्ष्मणतीर्थ, हनु-मानतीर्थ, सेतुमाधवतीर्थ, इन सब तीर्थोंमें भक्तिपूर्वक स्नान करके जो

कोई रामेश्वरजीके दर्शन करता है वह कोटि कुल सहित एक कल्प तक शिवलोक में वास करता है और जो कोई शुद्ध चित्त से इस रामेश्वर माहात्म्य को पढ़ता या सुनता है वह सब पातकों से छूट जाता है।

॥ इति श्री रामेश्वरमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ द्वारिकानाथ माहात्म्य ॥

पुराणों का कथन है कि द्वापर युग में यादव नामक क्षत्रिय कुल में एक वसुदेव नामक क्षत्रिय हुए।

उनकी कई रानियों में एक देवकी नामक रानी के गर्भ से भगवान् ने जन्म लिया और श्रीकृष्ण नाम से विख्यात हुए। इन्हीं श्रीकृष्ण जी महाराज के निवास करने के लिये विश्वकर्मा द्वारा रहित पांच योजन लम्बी द्वारिकापुरी हुई। उस उत्तम पुरी में देवताओं को कष्ट दूर करने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण जी ने सैकड़ों वर्ष निवास किया है उस भगवान् श्रीकृष्ण जी की प्यारी

द्वारिका का माहात्म्य जो कोई पढ़ता है या सुनता है वह सब पापों से छूट जाता है। यहां पर द्वारिकाधीश जी रणछोड़ टीकम जो महाराज और वासुदेव जी, प्रद्युम्न जी, अनिरुद्ध जी के दर्शन होते हैं इसके सिवाय आठ पटरानियों के महल अलग अलग बने हैं जिनकी प्रदक्षिणा और ज्ञान तीर्थ, बलभद्र तीर्थ, कृष्ण कुण्ड, गोमती तीर्थ इत्यादि तीर्थों में स्नान, दान,

दर्शन करने से विष्णु लोक को प्राप्त होता है। द्वारिकापुरी के माहात्म्य को जो कोई दान करता है उसके सब पाप छूट जाते हैं।

॥ इति श्री द्वारिकानाथ माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ हरिद्वार माहात्म्य ॥

पुराणों का कथन है कि जब सूर्यवंशी राजा भगरिथ जी कठिन तपस्या कर परम पवित्र श्री गङ्गा जी को स्वर्ग से यहां लाये, तब से इस महा पवित्र तीर्थ का नाम गङ्गाद्वार भी हुआ। जिसके स्मरण मात्र से पापों का नाश हो जाता

हैं। हरिद्वार से उत्तर की भूमि को स्वर्गभूमि कहते हैं। इसी से यहां पर सिद्ध मुनि गन्धर्वादि देवता संसार बन्धन से मुक्ति पाने के हेतु निवास किया करते हैं। जिस प्राणी ने ब्रह्महत्या के समान सैकड़ों पाप किये हों तो इस तीर्थ के स्मरण मात्र से ही नष्ट हो जाते हैं। इस परम पवित्र हरिकी पौडी, कुशावर्त, बिल्वक, नीलपर्वत कनखल में विधिपूर्वक भक्ति से जो

कोई स्नान करता है उसकी यात्रा निष्फल नहीं होती और वह जन्म-मरण से रहित हो जाता है अर्थात उसे स्वर्ग प्राप्त होता है।

॥ इति श्री हरिद्वारमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ अयोध्यापुरी माहात्म्य ॥

पुराणों का कथन है कि जो मनुष्य अयोध्यापुरी की यात्रा करता है वह मृत्यु जन्मादि को जीत लेता है और जो सरयू नदी में स्नान करके श्री रघुनाथ जी के दर्शन करता है वह कृतकृत्य हो जाता है और अन्त में बैकुण्ठ धाम को प्राप्त करता है।

॥ इति श्री अयोध्यापुरी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ काशीपुरी महात्म्य ॥

श्री शङ्कर जी के त्रिशूल पर बसी हुई असीवरुणा के बीच पांच कोस काशीपुरी है जहां मनुष्य की कौन कहे देवता भी मुक्ति चाहते हैं। श्री मणिकर्णिका, ज्ञानवापी, विष्णुपादोदक, पञ्च गङ्गा में स्नान करके श्री विश्वनाथजी के जो मनुष्य दर्शन करता है वह सदा कैलाश वास करता है। जहां पर काल भैरव अन्नपूर्णा साक्षात निवास

करते हैं उस परम पवित्र काशी क्षेत्र के बराबर अन्य कोई तीर्थ नहीं है।

इति श्री काशीपुरी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

---

* श्री *

॥ मथुरापुरी माहात्म्य ॥

हे कृत्तिकानन्दन ! मथुरापुरी में जप, तप, यज्ञ, ब्रतादिक का अनन्त फल है। यदि कभी प्रमाद वश कुछ पातक लग जाय तो विश्राम घाट पर जाने से वह पाप तत्काल नाश हो जाते हैं। कार्तिक

मास की यम द्वितीया को विश्राम घाट में स्नान करने से प्राणी यम-पाश से मुक्त होकर सदा बैकुण्ठ वास करता है। जहां साक्षात् श्री कृष्ण भगवान ने जन्म लिया है वह मोक्ष पुरी है इसमें सन्देह नहीं करना।

॥ इति श्री मथुरापुरी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ कांचीपुरी माहात्म्य ॥

---*---

विष्णु काञ्ची में साक्षात् विष्णु भगवान और शिवकाञ्ची में साक्षात शिवजी सदा निवास करते हैं। यह मुक्तिप्रद पुरी है इसमें भेद भाव करने वालों की अधोगति होती है इस कारण इन दोनों में भेद भाव न रखकर भक्ति पूर्वक दर्शन, स्नान करनेवाले सदा बैकुण्ठ वास करते हैं।

॥ इति श्री कांचीपुरी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ अवन्तिकापुरी माहात्म्य ॥

हे कार्तिकेय ! बैशाख में उज्जैन की क्षिप्रा नदी में स्नान करने से कभी पिशाच योनि नहीं होती। अवन्ती के कोटि तीर्थ में स्नान करके श्री महाकालेश्वर के दर्शन करने से शिवलोक प्राप्त होता है और यहां पर दान करनेसे कोटि गुणा फल मिलता है यह साक्षात् मुक्तिक्षेत्र है।

॥ इति श्री अवन्तिकापुरी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री बदरीनारायण यात्रा ॥

मील संख्या

हरिद्वारसे	केदारनाथ	१४१॥	मील
हरिद्वार से	बद्रीनाथ	१८३	मील
केदारनाथ से	बद्रीनाथ	११५	मील
बद्रीनाथ से	चमोली	४८	मील
बद्रीनाथ से	मेलचौरी	९२	मील
देहरादून से	गंगोत्तरी	१३२	मील
गंगोत्तरी से	केदारनाथ	११९	मील
बद्रीनाथ से	रामनगर	१६४	मील
देहरादून से	जमुनोत्तरी	१०९	मील
जमुनोत्तरी से	गंगोत्तरी	१२०	मील
हरिद्वार से	लक्ष्मणझूला	१७	मील

हरिद्वारसे ऋषिकेश १४ मील है यहांपर से सवारी और बोझा ढोनेके लिये कण्डी, झम्पान

किराये पर मिलते हैं। यहांसे ३ मील पर लक्ष्मण झूला है यहां श्रीलक्ष्मणजीका मन्दिर है यहांसे देवप्रयाग ३० मील है।

॥ लक्ष्मण झूला से देवप्रयाग ॥

नाम चट्टी	मील संख्या	कैफियत
खैरारी	२	
फुलवाड़ी	२	
घटगाड	२	
नाई मोहन	३	जल को अच्छी धारा
विजनी	३	चढ़ाई
कुण्ड	३।	
बन्दर भेल	३	उतार
महादेव	३।	
सेमल	३।।।	
कांडी	३	अस्पताल

व्यासघाट	४	डाकखाना, उतार
छालडी	३	
उमरासू	२।	
देवप्रयाग	२।।	तारघर, डाकघर, पुलिस

देवप्रयाग

यहांपर भागीरथी गङ्गा और अलकनन्दा का सङ्गम है तथा रघुनाथजीका दर्शन है। यहांपर पिण्डदान होता है और यहींपर श्री बद्रीनाथजीके पण्डा लोग रहते हैं। यहांसे—श्रीनगर १९ मील है।

देवप्रयाग से श्रीनगर

नाम चट्टी	मील संख्या	कैफियत
रानीबाग	८।।	
रामपुर	३।।	

बिल्लुकेदार	४॥	बिल्वेश्वरके दर्शन
श्रीनगर	२॥	

श्रीनगर

यहांपर पुलिस, अस्पताल, तार आफिस, डाकखाना है, यहांपर सब चीजें मिल सकती हैं और यहांसे एक रास्ता पौड़ी होकर कोटद्वार रेलवे स्टेशनको गया है और यहांसे रुद्रप्रयाग १८ मील है।

श्रीनगर से रुद्रप्रयाग

नाम चट्टी	मील संख्या	कैफियत
सुकरता	५	
भट्टी सेरा	२॥	डाकखाना
छातीखाल	१	
खांकरा	२॥	उतार

नरकोटा	२॥	चढ़ाई, उतार
गुलाबराय	३॥	चढ़ाई, उतार
रुद्रप्रयाग	१	

रुद्रप्रयाग

यहांपर मन्दाकिनी और अलकनन्दाका सङ्गम है तथा रुद्रेश्वर महादेवके दर्शन हैं और यहांपर तार आफिस, डाकखाना, अस्पताल है और यहां पर से एक मार्ग कर्णप्रयाग गया है जिसकी मील संख्या १८ है और यहांसे एक मार्ग पुल पार करके केदारनाथ गया है जिसकी मील संख्या ५४ के लगभग है।

रुद्रप्रयाग से त्रियुगी नारायण

नाम चट्टी	मील	कैफियत
छतोली	५	

तिलवाडा	१	
रामपुर	१	
अगस्तमुनी	४	डाकखाना
भीरी	७	
कुण्ड	४	
गुप्तकाशी	२॥	कड़ी चढ़ाई, डाकखाना
नाला	१	महादेवजीके दर्शन
व्यूंग	३	हलकी चढ़ाई
फाटा	३	
रामपुर	६	
पाटी गाड	३	
त्रियुगी नारायण	४	

त्रियुगी नारायण

यहांपर लक्ष्मीनारायणजी का दर्शन है और यहीं पर शिव पार्वतीजीका व्याह हुआ था। यहां पर

एक धूनी हमेशा जलती ही रहती है। यहांसे श्री केदारनाथ १४ मील पर हैं।

त्रियुगी नारायण से केदारनाथ

नाम चट्टी	मील	कैफियत
पाटी गाड	४	
सोमद्वारा	२	चढ़ाई
गौरीकुण्ड	३	
चिरवासा भैरव	२	चढ़ाई
रामवाड़ा	२	
पुरी केदारनाथ	३॥	कठिन रास्ता

पुरी केदारनाथ

यहांपर श्री केदारनाथ के दर्शन हैं। समीप ही रेतःकुण्ड, हंसकुण्ड व उदरकुण्ड हैं। यहांसे नाला

तक ऊपर लिखे मार्ग तक वापस जाना होता है, नाला से ३ मील ऊखीमठ है यहांपर केदारनाथ जीका गद्दी-स्थान है ६ महीना पट बन्द रहने तक केदारनाथजी की पूजा यहांपर होती है, गद्दीपर महादेवजी की मूर्ति है यहां से चमोली (लाल सांगा) २७ मील है।

ऊखीमठ से चमोली

नाम चट्टी	मील	कैफियत
गणेश चट्टी	३॥	
पोथीवासा	५	
चोपता	३	चढ़ाई
पांगरवासा	४	उतार
मण्डल	४	रास्ता जंगल से
गोपेश्वर	४॥	उतार
चमोली	३	

चमोली (लालसांगा)

यहां पर थाना, अस्पताल, डाकखाना, तार आफिस कचहरी हैं और यहांसे एक रास्ता बद्रीनाथको गया है दूसरा नन्दप्रयाग होकर रामनगर को गया है। यहांसे बद्रीनाथ ४८ मील है और रामनगर ११६ मील है।

चमोली से जोशीमठ

नाम चट्टी	मील	कैफियत
मठ चट्टी	१॥	
छिनका	१॥	
सियासैण	२	
हाट	१	
पीपल कोटी	२	चढ़ाई
गरुड़ गङ्गा	४	गरुड़जीका दर्शन स्नान

टंगणी	२	
पाताल गङ्गा	२	
गुलाब बकोटी	२	
हेलंग (कुमारचट्टी)	२	चट्टी बहुत बड़ी
खनोटी	१	
झरकुला	२	
सिंहधार	२	
जोशी मठ	१	

जोशी मठ

यहांपर श्री बद्रीनाथजी का गद्दी स्थान है पट बन्द होनेके बाद ६ मासतक श्री बद्रीनाथजी की पूजा यहां होती है और यहांपर नृसिंह भगवान तथा वासुदेवजी के दर्शन हैं और दण्डधारा का स्नान है और यहांपर रामबाग श्री वैष्णवों का स्थान है यहांसे पुरी श्रीबद्रीनाथ १८ मील है।

और जोशीमठ में पुलिस, तार, डाकघर, अस्पताल भी है। श्री दुर्गा देवीजी प्रसन्न।

जोशीमठ से बद्रीनाथ

नाम चट्टी	मील	कैफियत
विष्णु प्रयाग	१	विष्णु भगवान के दर्शन
घाट	३	
पण्डुकेशर	२	योगबद्री के दर्शन
शेषधारा	॥	श्री वैष्णवों का स्थान
लामवगढ़	२	
हनुमान चट्टी	५	हनुमानजी के दर्शन
पुरी श्री बद्रीनाथ	४॥	

पुरी श्री बद्रीनाथ

पुरीके उत्तरी भागमें श्री बद्रीनाथ जी का दिव्य मन्दिर है। मन्दिर के दरवाजे पर सामने की

ओर गरुड़ जी की मूर्ति है और मन्दिर के दो ड्योढ़ीके बाद श्री बद्रीनारायण की श्याम वर्ण मूर्ति एक हाथ से कुछ छोटो सामने की ओर विराजमान है। भगवान के दाहिने तरफ़ कुबेरजी, उद्धवजी, गरुड़जी हैं और बाईं ओर नरनारायण तथा नारदजी हैं। श्री बद्रीनारायण के सर्वाङ्ग के दर्शन प्रातःकाल स्नान करते समय होते हैं। श्री शङ्कराचार्यजी ने भगवान की इस मूर्तिको नारद कुण्डसे निकाल कर स्थापित किया था। यह स्वयंभू मूर्ति है। भगवान की परिक्रमा में एक ओर लक्ष्मीजी का मन्दिर है। पास ही रसोई घर है आगे भगवान का कोठार तथा घण्टाकर्ण क्षेत्रपाल जी के दर्शन हैं।

मन्दिर के बाहर भगवान की कचहरी है और नीचेकी ओर गङ्गाजोके किनारे तप्तकुण्ड है, तप्तकुण्ड

के पास ही नारदशिला व नारदकुण्ड है और गङ्गा जी के मध्य में नृसिंहशिला तथा बाराहशिला है और ऊपर की तरफ गरुड़शिला और केदारेश्वर के दर्शन हैं और यहीं पर श्रीशङ्कराचार्य की मूर्ति भी है। पासही में श्री रामानुज कोट श्रीवैष्णवों का स्थान है और बाजारके बीच में गङ्गारतन शर्मा का श्री बद्री भूषण कार्यालय है। यहां पर फोटो, रंगीन तसवीर, नकशा, दर्शनी-अंगूठी तथा सब तीर्थों के माहात्म्य वगैरह हर समय मिल सकते हैं।

श्रीबदरीभूषण कार्यालयके पास ही पुलिस स्टेशन तथा दूसरी ओर बाजारके बाहर तार व डाकघर हैं।

आगे पुरीके उत्तरी भाग में गङ्गाजी के किनारे ब्रह्मकपाल तीर्थ है यहां पर पिण्डदान होता है। आगे दो मीलपर माता मूर्ती के दर्शन हैं यहां पर वामन द्वादशीको बड़ा मेला होता है यहां से कुछ

दूर माणा ग्राम है। यहां पर मुचकुन्दगुफा और गणेशगुफा है। यहां से एक रास्ता तिब्बत को गया है दूसरा केशवप्रयाग के पास से वसूधारा को गया है। यहां से वसूधारा दो मील है। पुरी से वापस जानेपर [लालसांगा] चमोली तक पूर्व कथित मार्ग से जाना होता है।

चमोली से नन्दप्रयाग ७ मील है। यहां पर पोस्ट आफिस और वाजार अच्छा है तथा गोपाल जी के दर्शन हैं।

नन्दप्रयाग से कर्णप्रयाग

नाम चट्टी	मील	कैफियत
सोनला	३	
लंगासू	३	चढ़ाई, उतराई
जैकड़ी	२	
कर्णप्रयाग	४॥	

कर्णप्रयाग

यहां पर पिंडर गङ्गा और अलकनन्दा का सङ्गम है यहां पर कर्णेश्वर महादेव तथा उमाशङ्करी देवी के दर्शन और कर्णकुण्ड के स्नान हैं।

और यहां पर तार, डाकखाना, पुलिस, अस्पताल है और यहां से एक रास्ता रुद्रप्रयाग गया है दूसरा रामनगर को गया है यहां से मेलचौरी २१ मील है।

कर्णप्रयाग से मेलचौरी

नाम चट्टी	मील	कैफियत
सिमली	४	
सिरोली	२	
भटोली	१	
आदि बद्री	४	चढ़ाई
जंगल चट्टी	६	जंगल से रास्ता
ग्वाड गधेरा	४	
गैर सैण	१	उतार
धुनार घाट	१	उतार
मेल चौरी	६	

मेल चौरी

यहां पर कुली, झम्पान, कण्डी बदलना पड़ते हैं यहां से रामनगर के लिये दूसरे कुली मिलते ह।

फिर यहांसे एक मील पनुआखाल आगे १॥ मील सेमल खेत फिर ५॥ मील गणाई (चौखुटिया) है यहां पर डाकखाना, पुलिस है यहां से एक रास्ता द्वारहाट, रानीखेत होकर काठगोदाम गया है दूसरा रामनगर को गया है।

गणाई से रामनगर

नाम चट्टी	मील	कैफियत
मासी	६	
वृद्ध केदार	४	
भिखिया सैण	८	चढ़ाई
श्री कोट	३	यहांसे बैलगाड़ी मिलती है
गुजर घाटी	८	
गोदी	६	चढ़ाई
टोटा आम	१॥	उतार
कुमरिया	६॥	चढ़ाई
गरजिया	६	उतार
रामनगर	८	रेलवे स्टेशन

देहरादून से धरासू

नाम चट्टी	मील	कैफियत
राजापुर	७	चढ़ाई
झालकी	१४	उतार
धनोल्टी	९	चढ़ाई
काणाताल	८	उतार
बलडियाण	९	चढ़ाई
छाम	५	
धरासू	९	

धरासू से यमुनोत्तरी

नाम चट्टी	मील	कैफियत
गगनानी	२४	चढ़ाई
खरसाली	२०	उतार, चढ़ाई
यमुनोत्तरी	४	यमुनोत्तरो दर्शन

धरासू से गंगोत्तरी

नाम चट्टी	मील	कैफियत
डूंडा	८	

उत्तरकाशी	८	चढ़ाई
मनेरी	९	,,
भटवाड़ी	९	उतार
गगनानी	९	चढ़ाई
सूखी	८	,,
हरशिल	५	,,
जांगला	८	
गङ्गोत्तरी	८	श्री गङ्गाजी के दर्शन

भठवाडी से त्रियुगी नारायण

नाम चट्टी	मील	कैफियत
चोरना	९	चढ़ाई
पंगराणा	८	उतार
बूढ़े केदार	१२	चढ़ाई
हतकुड	५	उतार
धुत्तू	१०	,,
पंवाली	१०	,,
त्रियुगी नारायण	१३	नारायण के दर्शन

॥ समाप्तम् ॥

भजन ।

जय जय श्री बद्रीनाथ योग ध्यानि वाला ।
ठण्ढ तो विचित्र पड़े छाईं मेघ माला ॥
पवन तो झकझोर चले :बर्फ़ का हिमाला ।
जय जय श्री बद्रीनाथ० ॥

कामधेनु कल्प वृक्ष ठाढ़े नन्दलाला ।
करुणा के सिन्धु प्रभु भक्तन प्रतिपाला ॥
जय जय श्री बद्रीनाथ० ॥

शङ्ख चक्र गदा पद्म क्रीट मुकुट माला ।
मेखली जड़ाव जड़े तिलक ललित भाला ॥
जय जय श्री बद्रीनाथ० ॥

आरती लक्ष्मी जी की ।

जय जय जय जय जग जननी ।
सुफल कामना करो हमारी हे संकट हरनी ॥
हम तुम से बार बार माता कहें पुकार ।
दया करोगी लाज रखोगी तब होगा निस्तार ॥
जय जय जय जय जग जननी ।

आरती श्री बद्रीनाथ जी की ।

जय बदरीश विशाला, प्रभु तुम जय बदरीश विशाला । छत्र मुकुट सिर तिलक विराजे मेखलि अंग विशाला प्रभु जी अंग विशाला ॥ बन गुलाब गल दौना तुलसी की सोहत है माला । ॐ जय जय जय बदरीश० ॥ नर नारायण बाम विराजे दाहिन धनद दयाला । प्रभुजी दाहिन धनद दयाला ॥ कमला करत रसोई, परसत कंचन थाला । ॐ

जय जय जय बदरीश० ॥ बदरीवनमें गंध मादन है पावन शैल हिमाला। प्रभु जी पावन शैल हिमाला ॥ करत जोग जन तारन कारन पालन करत निहाला। ॐ जय जय जय बदरीश० ॥ खं सो शब्द-शब्द सो वायु-वायु से तेज कराला। प्रभुजी वायु से तेज कराला ॥ तेज से तोय रचो महि मंडल त्रिगुण सहित कृपाला। ॐ जय जय जय बदरीश० ॥

राग श्याम कल्याण

बदरी विशाल, आछो नीको नीको लागे में को बदरी विशाल। टीको है मणि को नीको नीको टीको भाल। बन गुलाब गल दौना तुलसी की मोहत है माल। आछो नीको नीको लागे०॥ नर हैं नारायण नीके नीके धनद दयाल। आगे

उद्धव नारद नीके नीकी रम्भा माल ॥ आछो नीको नीको लागे० ॥ पुरी है प्रभू की नीकी प्रभु के शैल विशाल ॥ तप्त कुण्ड नीको नीको ब्रह्म कपाल । आछो नीको नीको लागे० ।

प्रभाती

कर मन दर्शन श्री बदरी को । नर नारायण वाम विराजे दहिने लक्ष्मि कुबेर धनी को । कर मन दर्शन० ॥ उद्धव नारद अग्र विराजे बन्दों दोऊ कर गरुड़ मुनीको । कर मन दर्शन श्री बदरी को० ॥

भजन ।

चलो सखि श्री बदरीवनमें होत मन निर्मल या तन में । सरिता उपवन कंदरा जहं पर बड़े पहाड़ ॥ पवन सुगन्धित मन्द तहं शुभ्र हेम

आसार। ऋषि मुनि तप करते घन में॥ चलो सखि०॥ तप्त कुण्डको न्हाय के अरु दर्शन कर बदरीश। नारायण नर धनद मुनि उद्धव नवाओ शीश॥ जन्म तब सुफल होय छिन में। चलो सखि श्री बदरी बनमें, होत मन निर्मल या तन में॥

कव्वाली।

तुम्हारे ज्योति के दर्शन देख नर हो गये परसन। विपदमें साथ तुमही हो, प्रभो बद्रीनाथ तुमही हो। पिता अरु भ्रात तुमही हो, घड़ी है आज की धन् धन॥ तुम्हारे ज्योति०॥ छुटइया मोह ममता को, खींचकर डोरसे हमको।

मिटाया रंज अरु गमको, निछावर देव है तन मन ॥ तुम्हारे ज्योतिके दर्शन देख नर हो गये परसन ॥

कव्वाली ।

बदरी विशाल प्यारे आया शरण तुम्हारे ॥ लख फिरकर चौरासी आया, बड़े भाग्य मनुष्य तन पाया । अब फिर तेरि माया, प्रभु मुझको बांहि डारे ॥ बदरी विशाल प्यारे० ॥ है अर्ज मेरी तुम से, करो दूर आवागमन से । कैसे भुलाया मन से, फिरता हूं मारे मारे ॥ बदरी विशाल प्यारे० ॥ मैं बार बार टेरूं, प्रभु बाट तेरी हेरूं । हूं देव शरण तेरे, भक्तों के काज सारे ॥ बदरी विशाल प्यारे आया शरण तुम्हारे ॥

केदारा चार ताल।

बद्री पति दीनबन्धु शरण हूं तुम्हारे ॥ निर्विकार निराकार, अलक झलक खलक पार ! लखि न जाय तुमरो सार, भ्रम रहो जग सारे ॥ बदरी पति दीनबन्धु० ॥ सप्त लोक चौदह भुवन, बार बार कियो गवन। थकित भयो अब तौ जीवन, देव प्रभु उबारे ॥ बदरी पति दीनबन्धु शरण हूं तुम्हारे।

दादरा।

मेरा तुम दीजो बेड़ा तार बदरी भवसागर के पार ॥ तीन लोक चौदह भुवन सप्त दीप संसार। तुम हो मेरे हर्ता कर्ता निराकार साकार ॥ मेरा

तुम दीजो बेड़ा तार० ॥ बेड़ा मेरा आन पड़ा है भँवर बीच मँझधार। तुम बिन को है पार करैया मेरी ओर निहार ॥ मेरा तुम० ॥ नाद विन्दु से प्रगट भये हो तुम मेरे करतार। हाथ जोड़ कर विनति करत हूं तोहै बारम्बार ॥ मेरा तुम दीजो बेड़ा तार बदरी भवसागर के पार ॥

भजन चारोधाम।

चलो हो साधो चलो हो सन्तो,
चारोधाम कर आइये।
दर्शन कर बद्रीनाथ स्वामी,
आवा गमन मिटाइये ॥
कौन दिशा जगन्नाथ स्वामी,
कौन दिशा रामनाथ जी।

कौन दिशा रणछोड़ टीकम,
कौन दिशा बद्रीनाथ जी ।।
पूर्व दिशा जगन्नाथ स्वामी,
दक्षिण दिशा रामनाथ जी ।
पश्चिम दिशा रणछोड़ टीकम,
उत्तर दिशा बद्रीनाथ जी ।।
कौन कारण जगन्नाथ स्वामी,
कौन कारण रामनाथ जी ।
कौन कारण रणछोड़ टीकम,
कौन कारण बद्रीनाथ जी ।।
भोग कारण जगन्नाथ स्वामी,
योग कारण रामनाथ जी ।
राज कारण रणछोड़ टीकम,
तप कारण बद्रीनाथ जी ।।

कहा चढ़त जगन्नाथ स्वामी,
कहा चढ़त रामनाथ जी ।
कहा चढ़त रणछोड़ टीकम,
कहा चढ़त बद्रीनाथ जो ॥
अटका चढ़त जगन्नाथ स्वामी,
गंगा जल रामनाथ जी ।
मेवा चढ़त रणछोड़ टीकम,
फल चढ़त बद्रीनाथ जी ॥

भजन

भजु मन श्री बदरी नारायण करुणा सिन्धु दीन दयाल। कीट मुकुट मकरा-कृति कुण्डल, उर बैजन्ती माल ॥ भजु मन० ॥ शंख चक्र कर कमल विराजे, सुन्दर भुजा विशाल ।। भजु मन० ।। जो कोई दर्श करे बदरी को, छूटे भव जंजाल ।। भजु मन श्री बदरो नारायण करुणा सिन्धु दीन दयाल ॥

प्रभाती ।

उठि प्रभात बद्रीनाथ सुमिरहु मन मोरे। तम सम सब मोह जात, ज्ञान भान उदय गात, कलि मल सब भाग जात, सुमिरत प्रभु तोरे। उठि प्रभात० ।। प्रातकाल तप्त कुण्ड, न्हाय नहिं लगत ठंड, पाप जरत अति प्रचंड, भाजत यम चेरे ।। उठि प्रभात० ।। शैल द्वन्द अति उतंग, बीच बहत विमल गंग, पंच शिला मध्य संत, नाम लेत तोरे। उठि प्रभात०।।

प्रार्थना ।

बदरी विशाल भगवन, आया शरण तुम्हारी। बिगड़ी दशा सम्हालो, विनती यही हमारी ।। हम में न बल न शक्ति, साधन न ज्ञान भक्ति। वैकुंठ का भिखारी, आया शरण तुम्हारी ।।

बदरी विशाल० ।।

करके ये आश आया, होगी अवश्य दाया।
तुम तो हो सर्वाधारी, आया शरण तुम्हारी ॥
बदरी विशाल० ॥

कीजै प्रदान शक्ति, भरिये हृदय में भक्ति।
गंगा कि ये है विनती, लीजै खबर हमारी।
बदरी विशाल० ॥

भजन।

हिमालय बदरीनाथ पुरी में स्वामी भले विराजे जी ॥ पवन चले शीतल जहां बर्फ पड़े दिन रात। निकट बहै गङ्गा जी निर्मल, दर्शन से अघ जात ॥ स्वामी भले विराजे जी० ॥ शेष जिन्हें सुमिरन करें धरें महेश्वर ध्यान। वेद और ब्रह्मादि देवता करत स्तुति गान ॥ स्वामी भले विराजे जी० ॥ शक्ति गौर गणेश शारदा नारद

कहे पुकार। योग ध्यानि तुम्हारी लीला का कोई न पावे पार ।।। स्वामी भले विराजे जी० ॥ इन्द्रादिक सब देवता पूजत हैं छय मास। गंगा रतन पढ़े स्तुति के, होय पाप सब नाश। स्वामी भले बिराजे जी० ॥

श्री गंगा जो की स्तुति।

जय जय श्री जननि गंग शरण हूं तिहारो।
महिमा तुव है अपार, वेद कहें बार बार,
देवता करें गुहार, पाप ताप हारी ॥ जय जय० ॥
सुन्दर होते विहान, धरत तब तेरा ध्यान।
जाते करने नहान बाल-वृद्ध नारी ॥ जय जय ०॥
पाकर तव स्वच्छ नीर, होता कंचन शरीर,
भागती है आधि व्याधि कुष्ट की बीमारी। जय जय श्री जननि गंग शरण हूं तिहारी ॥

विनती ।

हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिये । शीघ्र सारे दुर्गुणोंको दूर हमसे कीजिये ॥ लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें । ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें ॥ हे प्रभो आनन्द दाता० ॥

भजन ।

हंसि पूछें जनकपुर की नारि नाथ कैसे गज के फन्द छुड़ाये । गज और ग्राह लड़त जल भीतर गज डूबन नहिं पाये । गज की टेर सुनत रघुनन्दन नंगे पायन धाये ।। नाथ कैसे० ।। छोरे न छूटे सियाजीको कंकन, कैसेक चाप चढ़ाये ।। नाथ कैसे० ॥

दादरा ।

तेरे नयनों में रामरस छाय गयोरे । राम, लखन, सिय, भरत शत्रुहन, हनुमत चंवर डुलाय

गयोरे ।। तेरे नयनों में ।। हनुमान सुग्रीव विभो-षण चरनन पर लिपटाय गयोरे ।। तेरे नयनों में राम रस छाय गयोरे ।।

स्तुति श्री रामचन्द्रजी की ।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् । नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ।। कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम् । पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुता वरम् ।। शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणम् । आजानु भुज शर चाप धरि संग्राम जित खर-दूषणम् ।। भज दीनबन्धु दिनेश दानव दलन दुष्ट निकंदनम् । रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।। इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रंजनम् । मम हृदय कंज

निवास करु कामादि खल दल गंजनम् ॥
मम हृदय कंज निवास करु, कामादि खलदल गंजनम् ।

लावनी ।

बिन काज आज महाराज लाज गइ मेरी । दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ दुःशासन वंश कुठार महा दुखदाई । कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई ॥ अब भयो धर्म का नाश पाप रहो छाई ॥ लखि धर्म सभाकी ओर नारि बिलखाई ॥ शकुनी दुर्योधन कर्ण खड़े खल घेरी ॥ दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ तुम दीनन की सुधि लेत देवकीनन्दन । महिमा अपार अनन्त भगवन्त भक्त दुख भंजन॥ तुम कियो सिया दुख दूरि शम्भु-धनु खंडन ॥ अति आरत मदन गोपाल मुनिन मन रंजन ॥ करुणानिधान भगवान करी क्यों

देरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ तुम सुनि गयन्द की टेर विश्व अघनासी। ग्राहको मारि छुड़ाई बंदि काटि दई गज की फाँसी ॥ मैं धरों तिहारो ध्यान द्वारिका बासी। अब काहे राज समाज करावत हाँसी ॥ अव कृपा करो यदुनाथ जानि चित चेरी। दुख हरो द्वारिका नाथ शरण मैं तेरो ॥ तुम पति राखो प्रहलाद दीन दुख टारो। भये खम्भ फाड़ नरसिंह असुर संहारो ॥ धन खेलत केशी आदि बकासुर मारो। मथुरा मुष्टिक चाणूर कंस को मारो ॥ तुम पिता मात की जाय कटाई बेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ भक्तन हित ले अवतार कन्हाई तुमने। नल कूबर की जड़योनि छुड़ाई तुमने ॥ बरषत प्रभुता अगम दिखाई तुमने। नख पर गिरिधर लियो बचाई तुमने ॥ प्रभु अब बिलंब

क्यों करी हमारी बेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥ बैठे राज समाज नोति निज खोई। नहिं कहत धर्म की बात सभा में कोई॥ पांचो पति बैठे मौन कौन गति होई। ले नन्द नन्दन को नाम द्रौपदी रोई॥ करि-करि विलाप संताप सभा में टेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥ सुनि दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी। हरि भये चीर में आप हरो दुख भारी॥ खैंचत हारो मतिमन्द बीर बलकारी। रख लई दीन की लाज आज बनवारी॥ हरषत सुर सुमन बजावत भेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥ क्या करी द्वारिकानाथ मनोहर माया। अंबर का लगा पहाड़ अन्त नहिं पाया॥ तिहुंलोक चतुर्दश भुवन चीर दर्शाया। बन्दि ईश गणेश परसाद कृष्ण गुण गाया॥ दोनन के दीनानाथ बिपति निरबेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥

भजन ।

लागो बृन्द्राबन नीको, माई मोको लागो बृन्द्राबन नीको ॥ घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरशन श्रीपतिजी को। निरमल नीर बहत जमुना-जल, भोजन दूध दही को ॥ रतन सिंहासन आप विराजैं मुकुट धरो तुलसी को। कुञ्जन-कुञ्जन फिरत राधिका शब्द सुनो मुरली को। मीरा के प्रभु गिरधर नागर श्याम बिना सब फीको ॥

भजन ।

शङ्कर महादेव देव सेवक सुर जाके ॥ टेक ॥ भस्म अङ्ग शीश गङ्ग, बाहन बैल अति प्रचण्ड गौर अर्द्धङ्ग सङ्ग रङ्ग भङ्ग छाके ॥ छाल मुण्डमाल चन्द्रभाल दृग विशाल जाके ॥ पावत नहिं पार शेष, ध्यावत सुर मुनि नरेश, गावत गिरिजा गनेश ब्रह्मादिक थाके ॥ दानव कुल गण हरैं, वासोबसु

भेष करैं, डमरू परे ध्यान धरे नोलकण्ठ वाके ॥ वरणत यश तुलसिदास, गिरिजापति चरण आस, ऐसे बर भेष नाथ भक्त हेतु राखे ॥

भजन ।

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई । अंसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई ॥ जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई । आई हौं भक्ति जान जगत देख रोई ॥ जगत में मात पिता बन्धू नहिं कोई । साधुन में बैठि-बैठि लोक-लाज खोई ॥ अब तो बात फैल गई जाने सब कोई । दास मीरा सरन आई होनी होय सो होई ॥ मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ॥

भजन ।

अब तो मन लागि रह्यो चरण में तुम्हारे । मथुरा में जन्म लियो गोकुला पधारे ॥ बौध रूप आनि धरो प्रीतम़ पति प्यारे ॥ दूर जाय बास कीनी चलत लोग हारे ॥ शङ्ख चक्र गदा पद्म हाथ में तिहारे ॥ शत्रु नहिं जान पावें रोक राखि न्यारे ॥

पाप दोष दूर किये पांच बेत मारे ॥ जगत माता जाति करैं ऊँचनीच हारे ॥ शेष गङ्ग मारतण्ड सिंह पौर ठाढ़े ॥ माधव कर विश्वास शरण है तिहारे ॥ अब तो पट खोल देव जगन्नाथ प्यारे ॥

भजन ।

माई निशि दिन घेरे गैल छैल मधुवन में । जोबन का मांगे दान कान्ह कुंजन में ॥ मैं दधि बेचन के काज जात बन भटकी । वंशीवट मदन-गोपाल पकड़कर मटकी ॥ मैं हटक-हटक हट गई न मानी हटकी ॥ नागरनट जमुना तीर पटक दई मटकी ॥ हो गई तई तकरार बात बातन में ॥ जोबन का मांगे० ॥ झटपट बहियां झकझोरी करी ठठोली । झींझट में झटका झटक हार अनमोली ॥ मोरी पलट-पलट माई पट घूंघट खोली । कर झपट चूनरी झटक मसक दई चोली ॥ है बेलिहाज ना रही लाज नैनन में ॥ जोबन का मांगे० ॥ घर आवे गाय चराय नन्दके लाला । जसुदा ने लिया बुलाय निकट बैठाला ॥ कर पकड़ कही ललकार

गजब करि डाला । करने आई फरियाद बिरज की बाला ॥ क्या नफा तुम्हें दधि लूटि-लूटि चाखनमें ॥ जोबन का मांगे० ॥ हरि कहैं सुनो माई मैं नहीं दधि लूटी। यह करने आई तूफान छबीली झूठी ॥ यह रपट परो गिर परी मटुकिया फूटी । उरझा झारिन में हार लरी सब टूटी ॥ हरि लई माय समझाय मधुर बतियन में ॥ जोबन का मांगे० ॥ सुनि श्रीकृष्ण के वचन सखी मसुकाई । छबि निरखि मनोहर बदन परम सुख पाई ॥ है लेखराज सुतपर सहाय कन्हाई । बन्दित गणेश परसाद रागिनो गाई ॥ है बसोकरन मोहनी मदनमोहन में ॥ जोबन का० ॥

भजन ।

माई मैं चन्द्र खिलौना लैहौं॥ सुरभी को पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुहैहौं ॥ मोतियन माल धरौं नहिं उर पर कठुला गर न छुऐहौं ॥ जैहौं भाग लौटिहौं छिति पै तेरी गोद न ऐहौं ॥ लाल

न होइहौं नन्दबबा को तेरो सुत न कहैहौं ॥ कान लगी समुझाव जसोदा बलदेवहि न सुनैहौं ॥ जैसे चन्दा अति निर्मल है तैसी दुलहिन लैहौं ॥ तेरी सौं मेरो सुन मैया अबहीं ब्याहन जैहौं ॥ सूरदास सब सखा बराती आनन्द मङ्गल गैहौं ॥

भजन ।

सांझहि से पंथ निहारे ॥ रुचिकरि ललिता भवन आपनो सुमन सुगन्ध सेज सँवारे । कबहुं ठाढ़ि गलियन मग जोहति अजहुं न आये श्याम पियारे ॥ कबहुंक निकलि दलाने ठाढ़ी कबहुंक गगन के तारे । सांझहि सूरश्याम बिन बिलपति बाला जहं तहं शब्द पुकारे ॥

भजन ।

आज तुम आज राधा प्यारी । श्रीबृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में ढूँढ़त फिरत तुझे बनवारी ॥ तुम तो ढोटा नन्दबाबा के मैं वृषभान दुलारी ॥ दधि मोरि खाई मटुकिया फोरी गडुली दीन्हीं

जल डारी ॥ सूरदास प्रभु बिनती करत हौं मैं तुमसे अब हारी ॥ आज० ॥

भजन ।

जननी मैं न जियों बिन राम ॥ राम लषन सिया बनको गमन कीनी, पिताजी गये सुरधाम ॥ होत प्रात हमहूं बन जावैं अवध ऐहैं केहि काम । कपटी कुटिल कुबुद्धि अभागिन, कौन हरो तेरो ज्ञान ॥ सुर नर मुनि सब दोष देतु हैं नाहिं किये भल काम । तुलसीदास बलि आस चरन की, भये विधाता बाम ॥

भजन ।

शिव शिव जपत मन आनन्द । जाहि सुमिरत विघ्न विनशत कटत यमको फन्द ॥ तीन लोक दयालु दाता हरत दुःख और द्वन्द्व ॥ बृषभ बाहन रुचि धतूरा कन्द भोजन भंग ॥ ओढ़नो बाघम्बरी शिव जटा सहित सुगङ्ग ॥ मुंडमाल त्रिशूल डमरू ब्याल लपेट अङ्ग ॥ तीन नेत्र त्रिशूल झलकत गौरी

सोहत संग ।। डिमिक डिमिक कर डमरू बाजतहोतथैया रंग ॥ सूरके प्रभु कृपा सागर भस्म झलकत अङ्ग ॥

सोच ना करो मन भोला देनेवाला है । गौरी अरधंग जाके भंग को अहारा है ।। हाथ में पिनाक लीन्हें सोहैं बैलवाला है ।। गौर सो शरीर जाको और कंठमाला है ।। सोई अवधूत मेरो मोहि प्रतिपाला है ।। दुष्टनके नासिबे को तीजा नैन ज्वाला है । देवीको सहाय तेरी सब से निराला है ।। वही मेरा स्वामी जाके गले मुण्डमाला है ।। सोच ना० ।।

भजन ।

कहां गयो जानकी नाथ खबर ल्यौ मेरी ।। करुणा कर चितवौ राम शरण मैं तेरी ।। मैं पड़्यो सोचके जलधि ताप बहु घेरी ।। नहिं सूझत आरा पार नाव नहिं बेरी ।। जब गह्यो दुशासन चीर द्रौपदी टेरी ।। तब दीन्हीं वस्त्र बढ़ाय कियो ना देरी ।। जब ग्राह ग्रसो गजचरण शरण हियहेरी ।। करुणानिधि दीनदयाल हर्यो दुख टेरी ।। कहां ।।

।। समाप्तम् ।।

शुद्ध शिलाजीत

"Shilajit"
THE BEST
INDIAN TONIC
शुद्ध शिलाजीत मिलनेका
एकमात्र ठिकाना